अक्टूबर-२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०१८

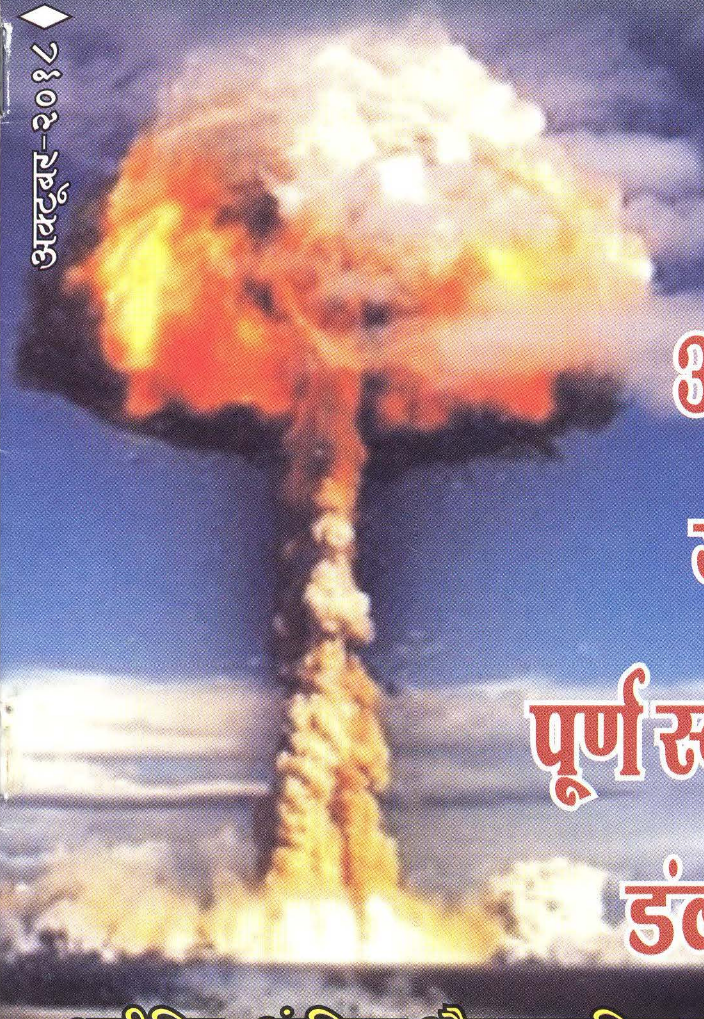

सत्यार्थ प्रकाश अपनी संस्कृति और गौरव के गुण गाता।
पूर्ण स्वदेशी भी हम सक्षम डंके की चोट बताता॥

शारीरिक, आंत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ८२

क्या खुशबू, क्या स्वाद, एम डी एच मसाले हैं खास

94 साल के महाशय जी जिन्हें अब 82 सालों का तजुर्बा है। इन्होंने 12 वर्ष की उम्र में ही काम करना शुरू कर दिया था। ऐसा लगता है कि इनका जन्म मसालों में ही हुआ है और मसाले ही इनका जीवन है। महाशय जी की ईमानदारी, मेहनत, लगन और मसालों का तजुर्बा ही एम.डी.एच. मसालों को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

खाइये और खिलाइये मज़ेदार स्वाद का आनन्द उठाइये

MDH
मसाले

असली मसाले
सच–सच

ESTD. 1919

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011 - 41425106 - 07 - 08 www.mdhspices.com

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११९
भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी
विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

०४ राष्ट्र रक्षा के साधन (वेद सुधा)

०७ "जय जवान जय किसान जय विज्ञान"

स्माइलिंग बुद्धा से ऑपरेशन शक्ति तक

October - 2018

१० ईश्वर या ईश्वर-उपासक?
१२ 'मुनि पतंजलि' संक्षिप्त परिचय
१३ नहीं रहे डॉ. भवानी लाल भारतीय
१४ पारस्परिक अभिवादन
१६ गीता आर्यसमाजी हो गई
२० क्रान्ति पुत्र 'श्यामजी कृष्ण वर्मा'
२३ ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता-३
२४ सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१८
२५ समाचार
२६ हलचल
२७ गुणों की खान गेहूँ का ज्वारा
२९ जीवन की सार्थकता प्रतिष्ठा से
३० सृष्टि रचना ज्ञानवान सत्ता का कार्य

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०५

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

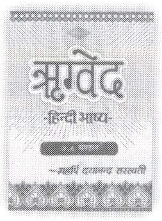

ओ३म्

वेद सुधा

राष्ट्र रक्षा के लिए प्रयत्न

राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सदा ही जागरूक रहकर अनेक प्रकार के प्रयत्न करने चाहिए। वेद हमें निम्न उपदेश दे रहा है-

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः
शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री
धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे
नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ - यजुर्वेद २२/२२

इस मंत्र में राष्ट्र के अन्दर निम्न ११ आवश्यकताओं की पूर्ति करने को बताया है जिससे राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है-

१. **आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायताम्**- हे ब्रह्मन्! राष्ट्र में सर्वत्र ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण उत्पन्न हों- राष्ट्र की रक्षा के लिए एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए यह सबसे प्रथम आवश्यकता है कि राष्ट्र के बुद्धिशाली व्यक्ति विविध विद्याओं में पारंगत हों और वे अध्यात्म विद्या में भी निपुण हों जिससे उनके सामने केवल भौतिकवाद का आदर्श ही न हो।

जिनके सामने केवल भौतिकवाद का ही आदर्श है वे उसकी प्राप्ति के लिए स्वार्थ के वशीभूत होकर, कामनाओं की तृप्ति के लिए मानवता से पतित भी हो सकते हैं। परन्तु जिन तत्ववेत्ता, ब्रह्मज्ञानी दार्शनिकों के सामने भौतिकवाद के अतिरिक्त उससे कहीं उत्कृष्ट अध्यात्मवाद का आनन्दरसमय समुद्र लहरें ले रहा है उनकी वृत्तियाँ बाह्य जगत् से उपरत होकर शान्त हो जाती हैं, अन्तःकरण शुद्ध निर्मल हो जाता है। संसार के भोग उनके सामने दुःखप्रद, काँटे सदृश प्रतीत होने लगते हैं। **स्वार्थहीन बनकर परमार्थ प्रेम से जनहित कार्यों में रत् रहने वाले ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण ही राष्ट्र का सच्चा नेतृत्व कर सकते हैं।** अतः राष्ट्र के लिए सर्वप्रथम सच्चरित्र, निस्वार्थी, तपस्वी, त्यागी ब्राह्मणों के आधिपत्य एवं नेतृत्व के लिए 'ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मणों' की आवश्यकता है।

२. **आ राष्ट्रे राजन्यः शूरः इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्**- राष्ट्र-रक्षा के लिए दूसरी आवश्यकता राष्ट्र के व्यक्ति क्षत्रिय गुणसम्पन्न हों, महारथी हों। महारथी उसे कहते हैं जो सहस्र से युद्ध करने की सामर्थ्य रखता है। यह क्षमता जिसे रथ-आरूढ़ होकर प्राप्त हो वह महारथ है।

महारथ में बैठकर महारथी व्यक्ति पर एक सहस्र व्यक्ति भी आक्रमण तो नहीं कर सकते अपितु वह सहस्रों पर चारों ओर से आक्रमण कर सकता है। अतः सुरक्षा की दृष्टि से पूर्वोक्त गुणयुक्त राष्ट्र का रक्षण करने वाले राजन्य वर्ण क्षत्रिय प्रचुर मात्रा में होने चाहिए। और वे अस्त्र-शस्त्र संचालन-कार्य में निपुण और युद्ध कार्य में कुशल होने चाहिए। उनके पास उत्तमोत्तम सुसज्जित रथ जो जल, स्थल एवं आकाश में चल सके होने चाहिए तथा उत्तमोत्तम अस्त्र-शस्त्र भी होने चाहिए।

३. **दोग्ध्री धेनुः**- उपरोक्त ब्रह्म-शक्ति एवं क्षत्र-शक्ति के विकास एवं संवर्धन के लिए राष्ट्र में प्रचुर मात्रा में दूध देने वाली गौवें भी होनी चाहिए।

गौ राष्ट्र की महान् सम्पदा हैं। जिस देश के पास जितनी अधिक गौएं होंगी उस देश के व्यक्ति उतने ही बलवान, तेजस्वी, बुद्धिमान्, दीर्घजीवी, आत्मनिर्भर, धनवान, प्रसन्न एवं सुखी होंगे।

गौ पृथिवी को भी कहते हैं। जिस राष्ट्र के पास भूमि न हो वह राष्ट्र अस्तित्वविहीन है। उसी प्रकार जिस राष्ट्र के पास गोधन नहीं वह राष्ट्र असमर्थ, असहाय, दीन, पराश्रित, अन्यों की दया और कृपा पर जीने वाला, बल, बुद्धिहीन हो जाता है। इसीलिए वेद ने गौ को 'अध्न्या'- अर्थात् अहिंसनीय कहा है। अतः जिस राष्ट्र को सर्व प्रकार से समृद्ध होना है उसे अपने देश की गौओं की पूर्णरूप से रक्षा करनी चाहिए।

गौ का अर्थ पृथिवी होने से यह भी तात्पर्य प्रकट होता है कि- ऐसी भूमि जो दोग्ध्री- अर्थात् जिससे अनेक प्रकार के अन्न, रस, धातु आदि पदार्थ प्राप्त हों- वह राष्ट्र के पास होनी चाहिए जिससे राष्ट्र समर्थ बन सके। जो राष्ट्र अपनी भूमि की रक्षा नहीं कर सकता वह अपने अस्तित्व को नष्ट कर देता है।

इसी प्रकार के पदार्थ, यन्त्रादि जिनके द्वारा उत्पादन-शक्ति की वृद्धि होती है वे भी धेनु संज्ञक हैं। उनका उत्पादन कार्य ही उस धेनु रूपी यन्त्र का दूध है।

गौ वाणी को भी कहते हैं। वाणी सार्थक होनी चाहिए। सार्थक वाणी का प्रभावशाली एवं फलवती होना भी आवश्यक है। जिस राष्ट्र की वाणी का प्रभाव नहीं उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं। अतः राष्ट्र में गौ का अत्यन्त महत्व है। और गौ के उपरोक्त प्रकार, समर्थ एवं फलदायी हों जिससे राष्ट्र की सुरक्षा हो।

४. **वोढानड्वान्**- राष्ट्र में उत्तम बैल हों जो सामान ढोने में समर्थ हों। राष्ट्र में वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की व्यवस्था सुरक्षा की दृष्टि से भी आवश्यक है। बिना इस क्रिया के राष्ट्र का कार्य नहीं चल सकता। अतः जिन साधनों से, वाहनों से इस कार्य की पूर्ति होती है उनका आदि प्रतीक बैल है। बैल की इस सामर्थ्य की पूर्ति करने वाले यन्त्र भी आनड्वान् संज्ञक हैं। राष्ट्र-रक्षा के साधनों में, वाहनों की अत्यन्त आवश्यकता है।

५. **आशुः सप्तिः**- शीघ्रगामी अश्व, राष्ट्र की यातायात-व्यवस्था, सुरक्षा एवं युद्ध कार्यों के लिए आवश्यक हैं। आशुगमन के इस प्राथमिक साधन की तथा और भी अधिक द्रुतगति के यातायात व्यवस्था के साधनों का अनुसन्धान इसी क्रम के अंगभूत हैं। राष्ट्र की सुरक्षा का यह भी प्रमुख अंग है। अतः राष्ट्र के पास शीघ्रगामी वाहन, यान आदि प्रचुरमात्रा में होने आवश्यक हैं।

६. **पुरन्धिर्योषा**- बहुत प्रकार के कला-कौशल, विद्यादि व्यवहारों को और गृहस्थ धर्म को धारण करने वाली राष्ट्र में नारियाँ होनी चाहिए। **या पुरून् बहून् दधाति सा पुरन्धिः**- अथवा सर्वगुण रूपालंकार को धारण करने वाली स्त्रियाँ राष्ट्र में होनी आवश्यक हैं- **पुरं शरीरं सर्वगुणसम्पन्नं दधाति सा पुरन्धिः।**

पुर का अर्थ नगर एवं राष्ट्र भी मान लेने पर नगर और राष्ट्र की समस्याओं के हल करने में स्त्रियों का महत्वपूर्ण भाग होना चाहिए। **राष्ट्र की स्त्रियाँ जितनी ही अधिक योग्य होंगी, उतना ही अधिक राष्ट्र सुदृढ़ एवं बलवान बनेगा।** राष्ट्र के निर्माण में अनेक प्रकार से स्त्रियों का अनिवार्यतः महत्व है। यदि उस महत्त्व को अनुभव करके राष्ट्र में स्त्रियों को उचित शिक्षण एवं स्थान प्रदान किया जावे तो राष्ट्र अवश्य उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है।

७. **जिष्णू रथेष्ठाः**- जयशील रक्षण एवं युद्ध की इच्छा रखने वाले रथ स्थित आरक्षीदल या सेना, राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है। जिस राष्ट्र के पास जयशील रथवाहिनी जल, स्थल एवं नभसेना नहीं होगी वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता।

रथ का तात्पर्य केवल स्थल पर बैल या घोड़े से चलने वाले शकट, वाहन, रथादि से ही नहीं है। अपितु वे सब रथ के अन्तर्गत हैं जिनमें अश्व की प्रतीक, शक्ति, यन्त्र लगे हैं और उस यन्त्र-शक्ति से गति उत्पन्न होकर वाहनों को जल, स्थल एवं नभ में चलने की गति करने की सामर्थ्य प्राप्त होती है। ये जितने ही उत्तम होंगे, उनके आश्रय से उनमें बैठे सैनिक भी उतने ही 'जिष्णु' जयशील बन सकेंगे- अन्यथा नहीं। अतः मंत्र दोनों को उत्तम बनाने का संकेत करता है।

८. **सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां**- हमारे इस यजमान के या राष्ट्रपति के राष्ट्र में सभ्य, युवावीर सन्ततियाँ हों। **सभ्य, युवा एवं वीर सन्तति राष्ट्र की सबसे उत्तम निधि हैं।** यदि राष्ट्र में सब वृद्ध या बालक ही हों तो युवा व्यक्तियों के अभाव में कुछ भी कार्य नहीं हो सकता। युवा व्यक्ति भी यदि निर्बल होंगे तो भी कार्य नहीं चल सकेगा। उनका बलवान् होना आवश्यक है। परन्तु बल के साथ सभ्य भी होना चाहिए।

सभ्यतारहित बलवान् सन्तति अनियन्त्रित रहती और उसे उचित अनुचित का भी ध्यान नहीं रहता है। असभ्यों के बल से देश को हानियाँ होती हैं। अतः राष्ट्र की युवा सन्तति वीर बलवान् हो, साथ ही सभ्य भी हो। सभ्यता, विद्यादि शुभ गुणों एवं सच्चरित्रता से प्राप्त होती है। अतः देश की वीरता, निरक्षरता एवं आचारहीनता के साथ न हो अपितु विद्यादि शुभ गुणों एवं आचार के साथ हो।

९. **निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु**- राष्ट्र की रक्षा और उन्नति के साधनों में जब-जब राष्ट्र को वर्षा की आवश्यकता हो मेघों से वृष्टि हो और जब-जब वर्षा की राष्ट्र को आवश्यकता न हो तब वर्षा न भी हो, वर्षा बन्द हो जावे। वर्षा राष्ट्र के जीवन एवं

रक्षण के लिए परम आवश्यक है। अतः वर्षा की समुचित व्यवस्था राष्ट्र को करनी चाहिए। वर्षा राष्ट्र के लिए जीवन तुल्य है अतः राष्ट्र का वर्षा पर नियन्त्रण हो सके ऐसा प्रयत्न सुरक्षा की दृष्टि से अत्यावश्यक है। जिससे अतिवृष्टि और अनावृष्टि पर नियन्त्रण प्राप्त कर बाढ़ की समस्या, खाद्य की समस्या और सिंचाई की व्यवस्था सुदृढ़ हो सके।

१०. फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां- फलवाली वनस्पतियाँ, वृक्ष, लताएँ, अन्न, औषधि आदि राष्ट्र में बहुत प्रमाण में

बहुतायत से पकें जिससे राष्ट्र को अपने खाद्यान्न एवं भोज्य पदार्थों पर पराश्रित न रहना पड़े। क्योंकि- **'अन्नं वै साम्राज्यानामधिपतिः'**- अन्न साम्राज्यों का, राष्ट्रों का भी अधिपति है। जो राष्ट्र अन्नादि से सम्पन्न हैं वे सुखी हैं। परन्तु जो राष्ट्र अपनी आवश्यकता से अधिक अन्न उत्पन्न करके अन्य देशों की भी खाद्य समस्या का हल करता है वह उन राष्ट्रों पर भी अपना आधिपत्य स्थापित करता है। अतः राष्ट्र को अपनी खाद्य स्थिति में आत्मनिर्भर होना अत्यन्त आवश्यक है।

११. योगक्षेमो नः कल्पताम्- अर्थात् हमारी अन्य जो आवश्यकताएँ हैं या समय-समय पर जो राष्ट्र की आवश्यकताएँ उत्पन्न हों उनकी यथोचित व्यवस्था करना योग्य है और उससे जो लाभ, आनन्द प्राप्त होता है वह क्षेम है। **अलब्ध की प्राप्ति और द्रव्यों का संयोग, वृद्धि योग है और उससे अपना परिपालन करना क्षेम है।**

इस प्रकार राष्ट्र के संचालन एवं संरक्षण के लिए वेद ने इस मंत्र में जिन ११ बातों की ओर ध्यान दिलाया है उनका पालन करके राष्ट्र सुखी, समृद्ध एवं सुरक्षित हो सकता है।

लेखक- पण्डित वीरसेन वेदश्रमी
''वैदिक सम्पदा'' से साभार उद्धृत

❑❑❑

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

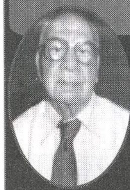

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

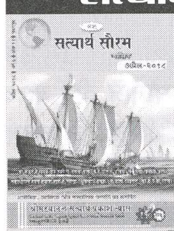

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

आत्म निवेदन

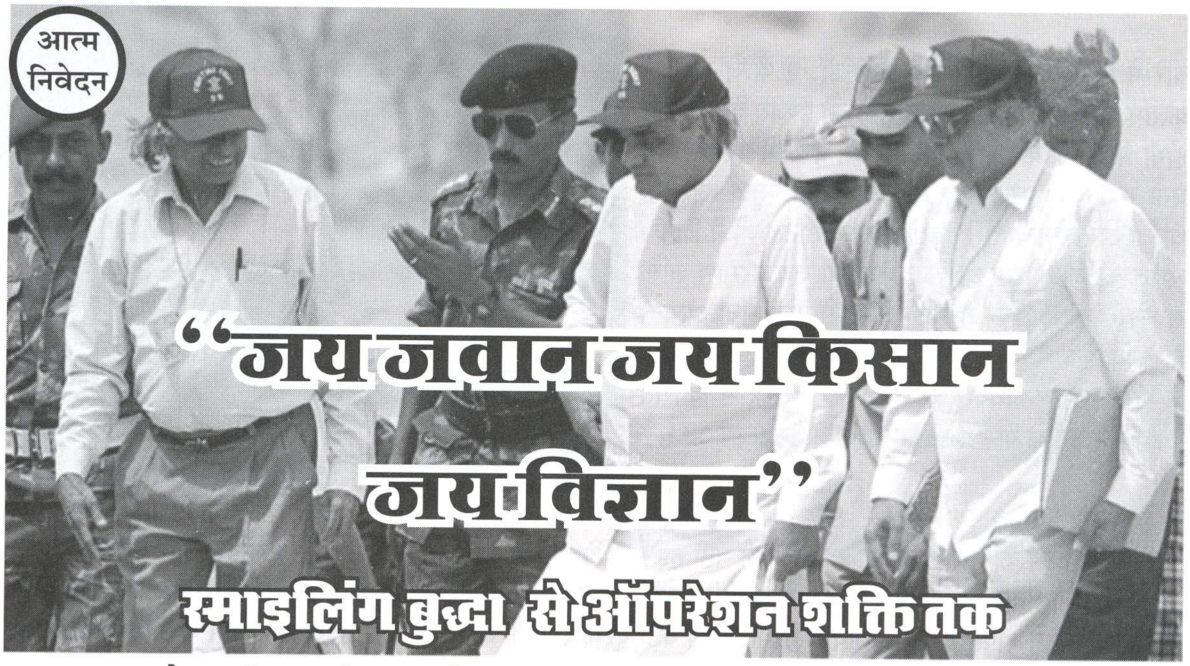

"जय जवान जय किसान जय विज्ञान"

स्माइलिंग बुद्धा से ऑपरेशन शक्ति तक

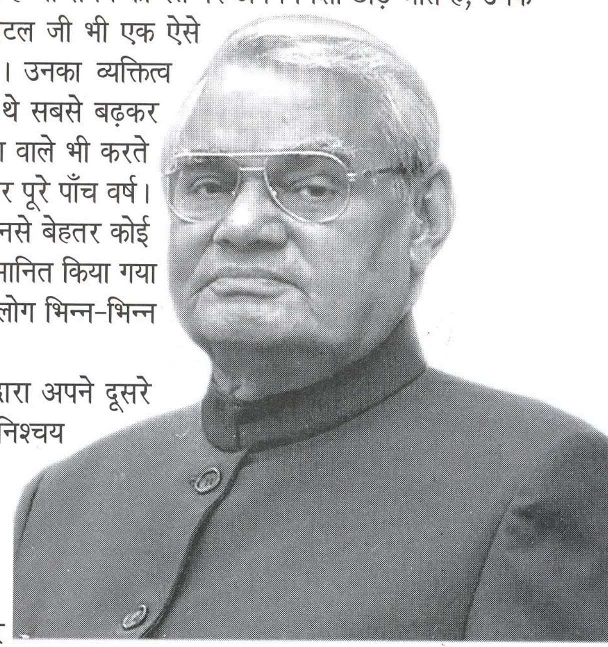

मृत्यु अटल सत्य है। सबको इस रास्ते जाना ही है परन्तु कुछ ही होते हैं जो समय की रेत पर अपने निशां छोड़ जाते हैं, उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की सुरभि वर्षों-वर्षों तक प्रसरित रहती है। अटल जी भी एक ऐसे व्यक्तित्व थे। वे लम्बे समय तक लोगों के दिलों में जिन्दा रहेंगे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे राजनेता थे, कवि थे, दार्शनिक थे, प्रखर वक्ता थे सबसे बढ़कर ऐसे इन्सान थे जिनका सम्मान उनके विरोधी राजनीतिक विचारधारा वाले भी करते थे। वे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने, तेरह दिन, तेरह महीने और पूरे पाँच वर्ष। विभिन्न विचारधारा वाले दलों में सामंजस्य कैसे बिठाया जाय यह उनसे बेहतर कोई नहीं जानता था। उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया जो उचित ही था। कुल मिलाकर आने वाले समय में अटल जी को लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यों के लिए याद करेंगे।

हमारी दृष्टि में अत्यन्त कोमल और भावुक हृदय वाले अटल जी द्वारा अपने दूसरे कार्यकाल में भारत को परमाणु शक्ति से सम्पन्न करने का दृढ़ निश्चय सर्वाधिक महत्वपूर्ण था, यह विशेष तब और भी अधिक था जब वे अकेले अपने दल की सरकार का नेतृत्व नहीं कर रहे थे बल्कि भानुमती के कुनवे को अपने कन्धे पर बिठाए हुए थे।

यह परमाणु विस्फोट के लिए अत्यन्त कठिन समय था। एन.पी.टी. पर भारत ने हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया था। सी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने की समय सीमा सर पर थी। अगर आप हस्ताक्षर कर देते हैं तो फिर सदैव के लिए न्यूक्लियर कार्यक्रम से किनारा करना होगा और नहीं करते तो क्यों नहीं यह बताना पड़ता। उधर सुरक्षा परिषद् की पाँचों परमाणु सम्पन्न शक्तियाँ स्वयं परमाणु हथियारों से लैस होकर चाहतीं थीं कि अब अन्य कोई देश इस ओर कदम भी न बढाए। ऐसी परिस्थिति में भारत की चिन्ता सर्वाधिक थी। पड़ोस में चीन पचासों परमाणु विस्फोट कर चुका था और पाकिस्तान भी कमोवेश उससे सहायता ले यह क्षमता प्राप्त कर चुका था यह भी कोई गोपनीय बात नहीं थी।

भारत में भी परमाणु क्षमता प्राप्त करने के सन्दर्भ में काफी पहले से सोचा जा रहा था। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के समय 'स्माइल बुद्धा' के नाम से १९७४ में परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग के लिए रेगिस्तान के पोखरण में जो विस्फोट किया गया उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय दबाब इस कदर बढ़ गया कि तब से लेकर १९९८ तक कोई भी प्रधानमंत्री इन विस्फोटों के

बारे में निर्णय नहीं ले सका। यद्यपि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का कहना था कि शक्ति राष्ट्र को इज्जत देती है वहीं होमी भाभा का कहना था कि हम १८ घण्टे में परमाणु बम बना सकते हैं। पर निर्णय तो राजनीतिक नेतृत्व को लेना था जो अन्ततोगत्वा पूरी दृढ़ता के साथ अटल जी ने लिया। भारत की चिन्ता यह थी कि दो पड़ौसी जब परमाणु शक्ति संपन्न हैं तब आपका परमाणु शक्ति सम्पन्न होना अत्यन्त ही आवश्यक है। कुछ लोगों का सोचना है कि पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार नहीं थे पर यह तथ्य से विपरीत है। पाकिस्तान के पास १९९८ से पूर्व ही ये आयुध आ चुके थे।

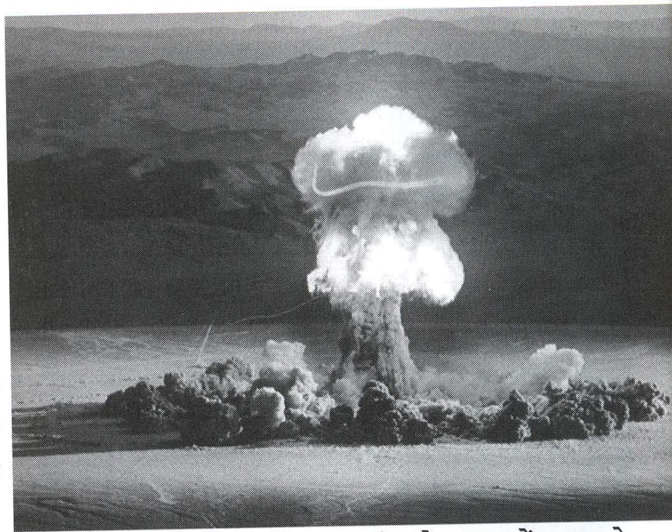

पहले परमाणु परीक्षण के बाद २४ साल तक अन्तर्राष्ट्रीय दबाव व राजनीतिक नेतृत्व में इच्छा शक्ति के अभाव में भारत के परमाणु कार्यक्रम की दिशा में कोई बड़ी हलचल नहीं हुई। यद्यपि पी. वी. नरसिम्हाराव ने १९९५ में इस ओर कदम बढाए थे परन्तु वे अंजाम तक नहीं पहुँचे। १९९८ में केन्द्रीय सत्ता में राजनीतिक परिवर्तन हुआ और अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने। वाजपेयी ने अपने चुनाव अभियान में भारत को बड़ी परमाणु शक्ति बनाने का नारा दिया था। सत्ता में आने के दो महीने के अन्दर ही उन्होंने अपने इस वादे को मूर्त रूप देने के लिए परमाणु वैज्ञानिकों को यथाशीघ्र दूसरे परमाणु परीक्षण की तैयारी के निर्देश दिए।

कोमल भावुक अटल जी की यही विशेषता मुझे प्रभावित करती है कि सम्पूर्ण विपरीत परिथितियों के चलते देश हित में कठोर निर्णय लेने में उन्होंने कोई हिचकिचाहट नहीं दिखायी। विस्फोटों की हलचल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर क्या गुल खिलायेगी यह तो अनुमान था ही पर यह भूचाल संसद में भी आ सकता था इसका अनुमान लगाना अनिश्चितता से भरा हुआ था। परन्तु अन्य दलों कि वैसाखियों पर खड़े अटल जी को सी.बी.टी. की समय सीमा समाप्त होने से पूर्व यह निर्णय लेना ही था।

पोखरण-२ (ऑपरेशन शक्ति) की सबसे बड़ी दिक्कत यह थी कि इसे अत्यन्त गोपनीय ढंग से करना अत्यावश्यक था। दो परमाणु शक्ति सम्पन्न देश पड़ौस से घूर रहे थे। पोखरण-१ के बाद तो अमेरिका के सेटेलाईट निरन्तर पोखरण पर नजर रखे हुए थे। उनका दावा था कि उनके सेटेलाईट इतने उन्नत हैं कि जमीन पर थार की रेत में खड़े भारतीय सैनिक की कलाई पर बंधी घड़ी में वे समय भी देख सकते हैं। ऐसे में छोटी-मोटी झाड़ियों के मध्य ५ बमों का विस्फोट और अमेरिका को हवा भी नहीं लगी यह भारतीय फौजियों तथा वैज्ञानिकों की तत्परता और कर्मठता का प्रतीक बन गया। यह पहला अवसर था जब अमेरिकी सीक्रेट एजेंसी सी.आई.ए. ने मुँह की खायी थी। उनके अरबों रुपये के सेटेलाईट धरे के धरे रह गए। सारे संसार को तभी पता चला जब अटल जी ने भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र घोषित कर दिया।

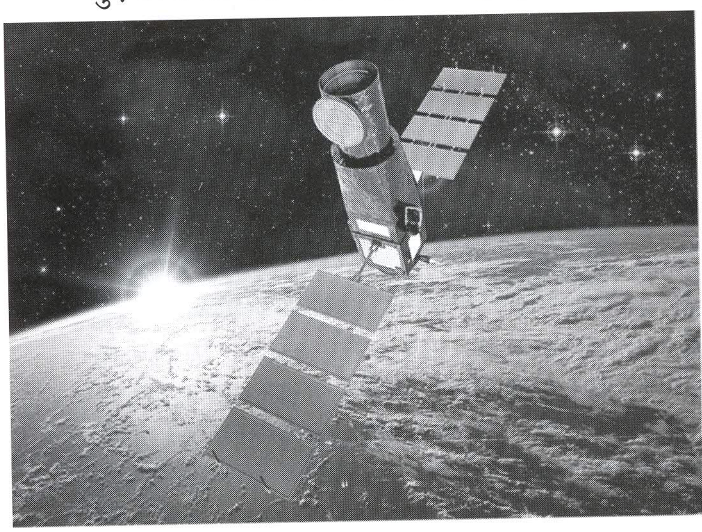

भारतीय सेना की ५८ इंजीनियर रेजीमेंट को खासकर इस काम के लिए चुना गया था। इस रेजीमेंट के क़माण्डेंट थे कर्नल गोपाल कौशिक। इनके संरक्षण में ही भारत के परमाणु हथियारों का परीक्षण किया जाना था। उन्हें इस मिशन को सीक्रेट रखने का भी काम सौंपा गया था। इस बात को इस रेजीमेंट ने इतने अच्छे से निभाया कि यह एक अजूबा बन गया।

भारतीय सेना ने इस ऑपरेशन में कई तरह की सावधानियाँ बरती थीं। इसी क्रम में भारतीय हाइड्रोजन बम का नाम 'व्हाइट हाउस' और एटम बम के एक दस्ते का नाम 'ताजमहल' रखा गया था। एक तीसरे बम का नाम 'कुम्भकरण' रखा गया। ए.

पी.जे अब्दुल कलाम साहब का नाम कर्नल पृथ्वी राज रखा गया था। चिलचिलाती धूप व असह्य गर्मी में डी. आर. डी. ओ. के प्रमुख कलाम साहब, तथा एटोमिक इनर्जी कमीशन के प्रमुख आर. चिदम्बरम साहब के अतिरिक्त ८० वैज्ञानिकों ने निरन्तर काम किया। ये सेना की ड्रेस पहनते थे ताकि सेटेलाइटों को कुछ अजीब न दिखे। रात्रि में काम करने के बाद सब कुछ पहले जैसा कर देना कभी नहीं भूलते थे।

इस ऑपरेशन में इतने कोडवर्ड्स का प्रयोग किया गया कि वैज्ञानिक मजाक में कहते थे कि इनको याद करने से सरल तो फिजिक्स के फार्मूले सुलझाना है। वैज्ञानिकों का नाम सियारा रखा गया, शाफ्ट्स का कैन्टीन तथा डिवाइस का व्हिस्की। जब दिल्ली पोखरण में बात-बात में यह पूछा जाता था कि सियारा अभी किचन में व्हिस्की पिला रही है तो इसका मतलब होता था कि वैज्ञानिक अभी शाफ्ट्स में डिवाइस लगाने का कार्य कर रहे हैं? ऐसे ही डी.आर.डी.ओ की टीम को चार्ली, बी.ए.आर.सी की टीम को ब्रावो और मिलिट्री को माइक कहा जाता था।

इस प्रकार इस अभूतपूर्व कार्य को पूरा अद्‌भुत कमिटमेंट के साथ किया गया। कुछ विश्लेषकों का मानना है कि ११ मई १९९८ को यदि ये ५ विस्फोट नहीं किये जाते तो बाद में यह सम्भव भी नहीं था।

११ मई को अटल जी ने प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी के नारे 'जय जवान जय किसान' में 'जय विज्ञान' जोड़कर इसे पूरा किया- 'जय जवान जय किसान जय विज्ञान।'

आज अटल जी के व्यक्तित्व व कृतित्व का स्मरण करते हुए 'ऑपरेशन शक्ति' को सम्पन्न कर, भारत का सर गर्व से ऊँचा करने में जो योगदान अटल जी ने दिया उसे स्मरण करना समीचीन है प्रासंगिक है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आयावर्त्त गैलेरी बहुत ही सुन्दर तरीके से सजाई गई है। स्वामी दयानन्द जी के जीवन का सम्पूर्ण चित्रमय वृतान्त बहुत ही खूबी के साथ चित्रित व वर्णित किया गया है। साथ ही देश के महान् क्रान्तिकारियों, आर्य समाज के अनेक विद्वानों एवं संन्यासियों का सचित्र वर्णन नवलखा महल इस भव्य 'आर्यावर्त्त गैलेरी' को देखने वालों के लिए ज्ञानवर्द्धक एवं अविस्मरणीय बनाता है। यह चित्रदीर्घा, पाखण्डियों के लिए महर्षि दयानन्द क्या थे व आर्य समाज ने क्या किया, देखने वालों को सोचने व समझने का अच्छा माध्यम है। - श्री श्वेतकेतु वैदिक, इन्दौर

हमने यहाँ से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एवं अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में अनेक जानकारी प्राप्त की। **हमें टेलीविजन के माध्यम से जो मिथ्या जीवन वृतान्त राम और कृष्ण का बतलाया गया था आज इन दोनों महापुरुषों के यथार्थ जीवनवृत्त को जानकर यही विचार आ रहा है कि कुछ मनोरंजन एवं धन के लिए लोग कैसे इतिहास के साथ छेड़छाड़ करते हैं।** बहुत आभार। - श्याम चन्द्र गर्ग, खमनौर

भीषण वज्रपात

आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान्, शीर्षस्थ साहित्यकार एवं इतिहासकार, एक लाख पृष्ठों से अधिक की उत्कृष्ट सामग्री का सृजन करने वाले रचनाधर्मी, वैदिक वाङ्मय के तलस्पर्शी विद्वान्, प्रखर वक्ता, सम्पूर्ण जीवन महर्षि दयानन्द के मिशन को गति देने में समर्पित कर देने वाले ऋषिभक्त, दयानन्द शोधपीठ के प्रथम अध्यक्ष डॉ. भवानी लाल भारतीय के निधन के समाचार से हम सब स्तब्ध हैं, निशब्द हैं। आर्य जगत् की यह एक ऐसी क्षति है जिसकी भरपायी कभी नहीं हो सकती। इस समय इतना संतोष अवश्य है कि न्यास ने यथा समय भारतीय जी के द्वारा आर्यसमाज को दिए गए योगदान को देखते हुए उनका सम्मान कर स्व-कर्तव्य का निर्वहन कर लिया था।
इस दुखद घड़ी में न्यास के सभी सदस्यों की ओर से शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें यह दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें। -भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में न्यास द्वारा डॉ. भवानी लाल भारतीय जी का सम्मान (फाईल फोटो)

विजयादशमी पर्व पर विशेष

ईश्वर या ईश्वर-उपासक? श्रीकृष्ण, श्रीराम?

श्रीराम का बड़प्पन और गौरव किस बात में है? क्या वे इसलिए महान् थे कि वे अपने पिताजी की अनुचित बात को मानकर वन में चले गये थे? क्या वे इसलिए आदर के पात्र हैं कि वे एक आदर्श शासक थे, एक आदर्श पुत्र थे, एक आदर्श भाई थे, एक आदर्श पति थे, एक आदर्श मित्र थे?

श्रीकृष्ण जी किस लिए महान् कहलाते हैं? क्या उन्होंने जन्मभूमि को छोड़कर पूरे राष्ट्र की प्रगति के लिए अपनी पृथक् कर्मभूमि का चयन कर लिया? क्या उनके पास सुदर्शन चक्र था इसीलिए वे महान् थे? क्या उन्होंने प्रजा की रक्षा के लिए अपने मामा जी का भी वध कर दिया था इसीलिए?

मैं समझता हूँ- नहीं। उनके विमल यश का कारण तो कुछ और ही है। न ही रघुवंश की परम्परा थी और न ही यदुवंश की प्रसिद्धि।

इसका मुख्य कारण यह है कि वे दोनों के दोनों ईश्वर के सच्चे उपासक थे। किसी भी परिस्थिति में वे ईश्वर को छोड़ते नहीं थे अर्थात् यथा- सामर्थ्य ईश्वर की आज्ञाओं का परिपालन करते थे। चाहे यात्रा में हों, चाहे युद्ध भूमि में हों परन्तु ईश्वर की उपासना नहीं छोड़ते थे। इनके अन्दर मनुष्योचित गुण ही विद्यमान थे अतः इन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहें या फिर योगीराज श्रीकृष्ण परन्तु ईश्वर कदाचित् नहीं, क्योंकि ईश्वर भला अपनी ही उपासना क्यों करने लगा?

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनानन्ते तनुत्यजाम्॥ - रघुवंश १/८

रघुवंशी बालकपन में समस्त विद्याओं का अभ्यास कर लेते थे। युवावस्था में वे गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर भोगों की अभिलाषा करते थे। बुढ़ापे में वे वानप्रस्थी बन जाते थे और अन्त में योगाभ्यास करते हुए अपने शरीरों का त्याग करते थे। परन्तु, 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' इसके अपवाद थे-

पुत्रसंक्रान्तलक्ष्मीकैर्यद् वृद्धेक्ष्वाकुभिर्धृतम्।
धृतं बाल्ये तदार्येण पुण्यमारण्यकव्रतम्॥ - उत्तररामचरित १/२२

पुत्र को राज्यलक्ष्मी सौंपकर इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न राजा वृद्धावस्था में जिस वानप्रस्थ-व्रत को धारण करते थे, श्रीराम ने उस पवित्र व्रत को यौवनावस्था में ही धारण कर लिया था। उठती हुई जवानी और जीवन में प्रसन्नतापूर्वक वन में चले जाना ही श्रीराम के गौरव को बढ़ाता है। श्रीराम वन में जाते हैं परन्तु उनके मुखमण्डल पर विषाद की रेखा तक नहीं है। उनकी स्थिति के सम्बन्ध में महाराज दशरथ ने महानाटक ३/२२ में ठीक ही कहा था-

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः॥

राज्याभिषेक के लिए बुलाए गए और वन के लिए विदा किये गए श्रीराम के मुख के आकार में मैंने कोई भी अन्तर नहीं देखा।

हर्ष और शोक में, सुख और दुःख में, मान और अपमान में, लाभ और हानि में समान रहना यह महापुरुषों का चिह्न होता है।

किसी कवि ने कितना सुन्दर कहा है-

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरुपता॥

उदय होता हुआ सूर्य लाल होता है और अस्त होता हुआ सूर्य भी लाल ही होता है, इसी प्रकार सम्पत्ति और विपत्ति में महापुरुष समान ही होते हैं। सम्पत्ति प्राप्त होने पर हर्षित नहीं होते और विपत्ति पड़ने पर दुःखी नहीं होते।

श्रीकृष्ण जी भी किशोर अवस्था में ही गुरुकुल में अध्ययन हेतु चले गए थे। एक राजकुमार होने के कारण उनका देश वा राज्य के प्रति जो भी कर्त्तव्य होता था उन्होंने बहुत ही उत्तमता के साथ निभाया।

श्रीराम और श्रीकृष्ण तो स्वयं ईश्वर की पूजा करते थे। रामायण और महाभारत इसके साक्षी हैं-

प्रक्षिप्त भाग को छोड़कर जब हम शुद्ध रामायण या शुद्ध महाभारत का स्वाध्याय करते हैं तो हमें वास्तविक इतिहास

का ज्ञान होता है । उसके कुछ प्रसंग उद्धृत किये जाते हैं-

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्॥
तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नरोत्तमौ।
स्नात्वा क्रतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम्॥ - बाल. २३/२-३

'हे कौशल्या की संतान! प्रातःकाल की सन्ध्या का समय हो गया है। हे नरशार्दूल! उठो और उपासना करो। उस ऋषि के परम उदार वचनों को सुनकर, स्नान करके उन दोनों, श्रीराम और श्रीलक्ष्मण जी ने गायत्री का जाप किया। रामायण में यह नहीं लिखा कि उन्होंने मूर्तिपूजा की।

इसी प्रकार का वर्णन महाभारत में श्रीकृष्ण जी के विषय में प्राप्त होता है-

अवतीर्य रथात् तूर्णं क्रुत्वा शौचं यथाविधि।
रथमोचनमादिश्य सन्ध्यामुपविवेश ह॥ - महा. उद्योग. ८४/२१

जब सूर्यास्त होने लगा तब श्रीकृष्ण शीघ्र ही रथ से उतरे और घोड़ों को रथ से खोलने की आज्ञा देकर और शौच-स्नान करके विधिपूर्वक सन्ध्योपासना करने लगे।

ब्राह्ममुहूर्त उत्थाय वार्युपस्पृश्य माधवः।
दध्यौ प्रसन्नकरण आत्मानं तमसः परम्॥ - भा. पु. १०/७०/४

श्रीकृष्ण जी ब्रह्ममुहूर्त में उठकर, पवित्र जल से हाथ मुँह धोकर, अत्यन्त प्रसन्न हो, हृदय में प्रकृति से परे ज्योतिस्वरुप परब्रह्म का ध्यान करने लगे।

अथाप्लुतोऽभस्यमले यथाविधि, क्रियाकलापं परिधाय वाससी।
चकार सन्ध्योपगमादि सत्तमो, हुतानलो ब्रह्म जजाप वाग्यतः॥
- भा. पु. १०/७०/६

श्रीकृष्ण जी ने स्वच्छ जल में डुबकी लगाकर स्नान किया। फिर स्वच्छ धोती पहनकर एवं उत्तरीय धारण करके श्रद्धापूर्वक सन्ध्योपासना की। तदनन्तर वे हवन करके मौन होकर गायत्री का जाप करने लगे।

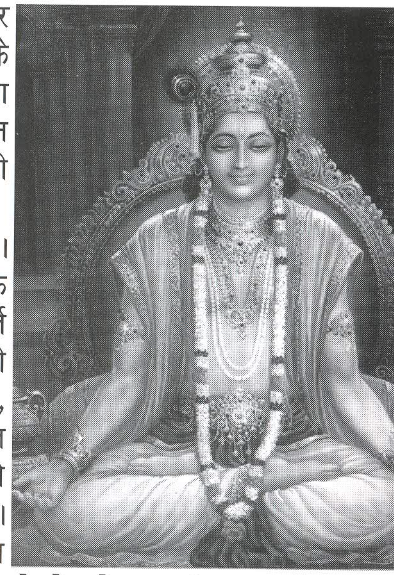

श्री राम स्थितप्रज्ञ थे। संसार में हम देखते हैं कि जब कभी हमारी इच्छापूर्ति में कोई छोटा-मोटा भी आघात उपस्थित करता है, तो हम उसके प्रति कुपित ही नहीं प्रत्युत् मरने-मारने को भी तैयार हो जाते हैं। किन्तु श्रीराम असाधारण योगीसम स्थिरप्रज्ञ थे जो बड़े से बड़े कष्ट के समय भी लेशमात्र विचलित नहीं होते थे। (एक ईश्वर भक्त में ही यह गुण हो सकता है।) इसीलिए महर्षि वाल्मीकि लिखते हैं-

न वनं गन्तुकामस्य त्यजतश्च वसुन्धराम्।
सर्वलोकातिगस्येव लक्ष्यते चित्तविक्रिया॥ - वा.रा. अयो. १६/३३

अर्थात्- जिस समय श्रीराम को राजतिलक के लिए बुलाया गया तथा जिस समय उनको १४ वर्ष के वनवास के लिए कहा गया, ऐसे हर्षविषाद के समय में भी उनके मन में किसी प्रकार का विकार किसी को न दिख पड़ा। ❑❑❑

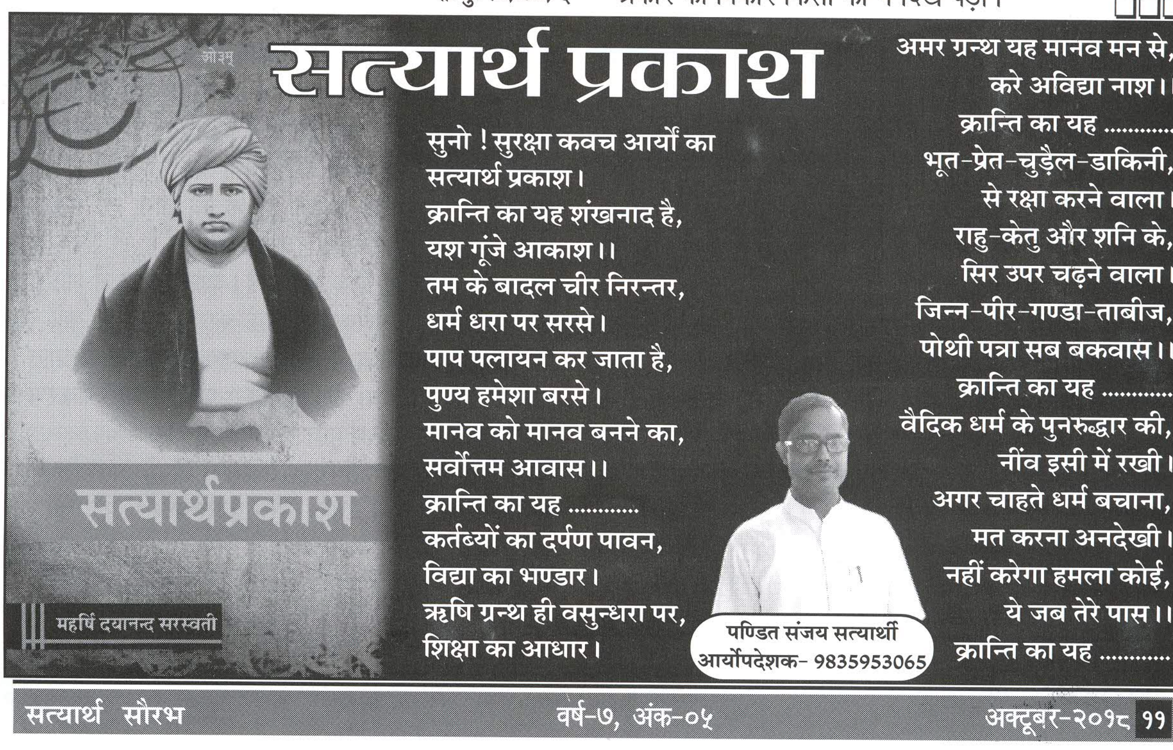

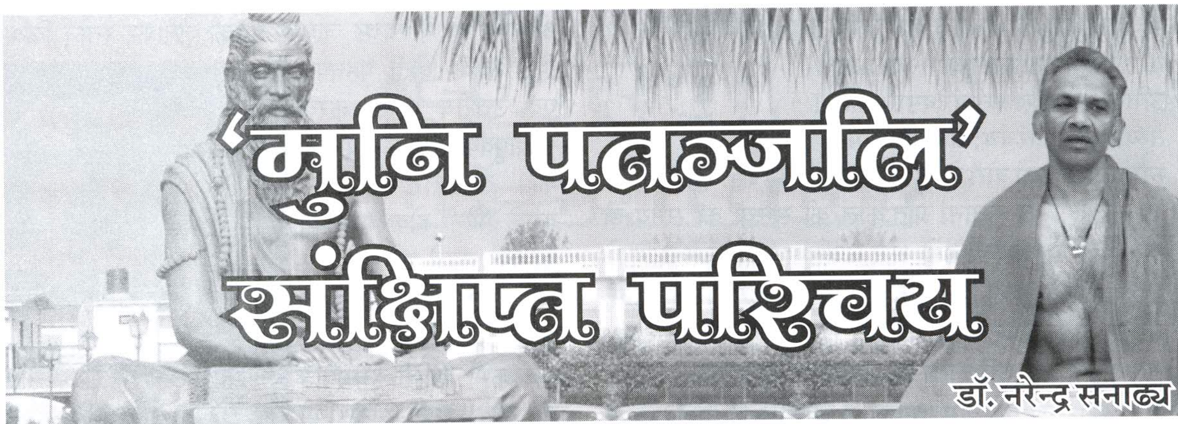

'मुनि पतञ्जलि' संक्षिप्त परिचय

डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य

महर्षि पतंजलि योगसूत्र के रचनाकार हैं जो 'हिन्दुओं के छः दर्शनों (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त)' में से एक है। भारतीय साहित्य में पतंजलि के लिखे हुए दो मुख्य ग्रन्थ मिलते हैः' 'योगसूत्र, अष्टाध्यायी पर भाष्य और आयुर्वेद पर ग्रन्थ।' कुछ विद्वानों का मत है कि ये तीनों ग्रन्थ एक ही व्यक्ति ने लिखे, अन्य की धारणा है कि ये विभिन्न व्यक्तियों की कृतियाँ हैं। पतंजलि ने पाणिनि के अष्टाध्यायी पर अपनी टीका लिखी जिसे महाभाष्य का नाम दिया (महाभाष्य समीक्षा, टिप्पणी, विवेचना, आलोचना)। इनका काल कोई २०० ईस्वी पूर्व माना जाता है।

'जीवन'

महर्षि पतंजलि काशी में ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में विद्यमान थे। इनका जन्म गोनार्ध (गोण्डा, उत्तर प्रदेश) में हुआ था पर ये काशी में नागकूप पर बस गये थे। ये व्याकरणाचार्य पाणिनी के शिष्य थे।

'योगदान'

महर्षि पतंजलि महान् चिकित्सक थे और इन्हें ही 'चरकसंहिता' का प्रणेता माना जाता है। 'योगसूत्र' महर्षि पतंजलि का महान् अवदान है। 'महर्षि पतंजलि रसायनविद्या के विशिष्ट आचार्य थे- अभ्रकविंदास, अनेक धातु योग और लौह शास्त्र इनकी देन है।' पतंजलि संभवतः पुष्यमित्र शुंग (१९५-१४२ ई.पू.) के शासन काल में थे। राजाभोज ने इन्हें तन के साथ मन का भी चिकित्सक कहा है।

'योगेन चित्तस्य पदेन वाचांमलं शारीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तंप्रवरंमुनीनांपतंजलिंप्रांजलिरानतोऽस्मि।।'

(अर्थात् 'चित्त-शुद्धि के लिए योग' (योगसूत्र), वाणी-शुद्धि के लिए व्याकरण (महाभाष्य) और 'शरीर-शुद्धि के लिए वैद्यकशास्त्र' (चरकसंहिता) देने वाले मुनि श्रेष्ठ पतंजलि को प्रणाम!)

ई.पू. द्वितीय शताब्दी में 'महाभाष्य' के रचयिता महर्षि पतंजलि काशी-मण्डल के ही निवासी थे। 'मुनित्रय की परंपरा में वे अंतिम मुनि थे।' पाणिनी के पश्चात् पतंजलि सर्वश्रेष्ठ स्थान के अधिकारी पुरुष हैं। उन्होंने पाणिनी व्याकरण के महाभाष्य की रचनाकर उसे स्थिरता प्रदान की। वे अलौकिक प्रतिभा के धनी थे। व्याकरण के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों पर भी इनका समान रूप से अधिकार था। व्याकरण शास्त्र में उनकी बात को अंतिम प्रमाण समझा जाता है। उन्होंने अपने समय के जनजीवन का पर्याप्त निरीक्षण किया था। अतः महाभाष्य व्याकरण का ग्रन्थ होने के साथ-साथ तत्कालीन समाज का विश्वकोश भी है। द्रविड़ देश के सुकवि रामचन्द्र दीक्षित ने अपने 'पतंजलि चरित' नामक काव्य ग्रन्थ में उनके चरित्र के सम्बन्ध में कुछ नये तथ्यों की संभावनाओं को व्यक्त किया है। उनके अनुसार आदि शंकराचार्य के दादागुरु आचार्य गौड़पाद महर्षि पतंजलि के शिष्य थे।

प्राचीन विद्यारण्य स्वामी ने अपने ग्रन्थ 'शंकर दिग्विजय' में आदि शंकराचार्य में गुरु गोविन्दपादाचार्य को पतंजलि का रुपान्तर माना है। इस प्रकार उनका सम्बन्ध अद्वैत वेदांत के साथ जुड़ गया।

'कालनिर्धारण'

महर्षि पतंजलि के समय निर्धारण के सम्बन्ध में पुष्यमित्र कण्व वंश के संस्थापक ब्राह्मण राजा के अश्वमेध यज्ञों की घटना को लिया जा सकता है। यह घटना ई.पू. द्वितीय शताब्दी की है। इसके अनुसार महाभाष्य की रचना का काल ई.पू. द्वितीय शताब्दी का मध्यकाल अथवा १५०ई.पूर्व माना जा सकता है। महर्षि पतंजलि की एकमात्र रचना महाभाष्य है जो उनकी कीर्ति को अमर बनाने के लिये पर्याप्त है। दर्शन शास्त्र में शंकराचार्य को जो स्थान 'शारीरिक भाष्य' के कारण प्राप्त है, वही स्थान पतंजलि को महाभाष्य के कारण व्याकरण शास्त्र में प्राप्त है। पतंजलि ने इस ग्रंथ की रचनाकर पाणिनी के व्याकरण की प्रामाणिकता पर अंतिम मुहर लगा दी है।

द्रविड़ देश के सुकवि रामचन्द्र दीक्षित ने अपने 'पतंजलि चरित' नामक काव्य ग्रन्थ में उनके चरित्र के सम्बन्ध में कुछ नए तथ्यों की संभावनाओं को व्यक्त किया है। उनके अनुसार शंकराचार्य के दादागुरु आचार्य गौड़पाद पतंजलि के शिष्य थे।

- ६१, जे.पी. नगर, सेक्टर-८, हिरणमगरी,
उदयपुर- ३१३००२ (राज.)
चलभाष- ९४६२४७४१७८

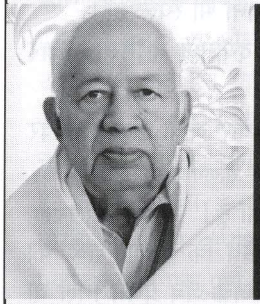

आर्यसमाज की महान् विभूति
डॉ. भवानी लाल भारतीय

- डॉ. विवेक आर्य

भवानी लाल भारतीय जी का ११ सितम्बर २०१८ रात को देहावसान हो गया। उनका जाना बहुत ही दुःखद समाचार है। वैदिक साहित्य तथा आर्य समाज के लिए यह अपूरणीय क्षति है, ऋषि दयानन्द के जीवन पर जितना साहित्य उन्होंने दिया वह उनकी अद्वितीय देन है, उनकी स्मृति को शत शत नमन।

स्वामी दयानन्द की वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने में हजारों आर्यों ने अपने-अपने सामर्थ्य के अनुसार योगदान दिया। साहित्य सेवा द्वारा श्रम करने वालों ने पंडित लेखराम की अंतिम इच्छा को पूरा करने का भरपूर प्रयास किया। डॉ. भवानीलाल भारतीय आर्य जगत् की महान् विभूति हैं जिनका सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा द्वारा ऋषि के ऋण से उऋण होने के लिए प्रयासरत रहा। **राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर ग्राम में १ मई १९२८ को भारतीय जी का जन्म हुआ।** प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात् आपने अध्यापन करते हुए हिन्दी एवं संस्कृत दो भाषाओं में एम. ए. किया। कालान्तर में आपने 'आर्यसमाज की संस्कृत भाषा को देन' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखा जिसे पंडित भगवद्दत्त सरीखे मनीषी द्वारा सराहा गया। आप आर्यसमाज पाली, अजमेर के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, परोपकारिणी सभा, सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी रहे। आप स्वामी दयानन्द चेयर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के अध्यक्ष पद से सेवा निवृत्त हुए।

डॉ. भारतीय जी का लेखन-

१. तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ- ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य, महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय, आधुनिक धर्म सुधारक और मूर्तिपूजा, महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द और ईसाई मत।

२. वेद विषयक ग्रन्थ- वेदों में क्या है?, वेदाध्ययन के सोपान, उपनिषदों की कथाएं भाग १, ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद एवं अथर्ववेद परिचय, वेदों की अध्यात्मधारा, वैदिक कथाओं का सच, उपनिषदों की अध्यात्म धारा, ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद एवं अथर्ववेद अध्यात्म शतक,

३. ऋषि दयानन्द विषयक ग्रन्थ- महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन, महर्षि दयानन्द श्रद्धांजलि, महर्षि दयानन्द प्रशस्ति, ऋषि दयानन्द के ऐतिहासिक संस्मरण, स्वामी दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्त, दयानन्द साहित्य सर्वस्व, महर्षि दयानन्द प्रशस्ति काव्य, मैंने ऋषि दयानन्द को देखा, ऋषि दयानन्द की खरी-खरी बातें, ऋषि दयानन्द के चार लघु चरित, दयानन्द चित्रावली (अंग्रेजी), swami dayanand saraswati his life and ideas- shiv nandan kulyar।

४. महापुरुषों के जीवनचरित- श्री कृष्ण चरित, पंडित गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा कालूराम जी, कुंवर चाँद करण शारदा, नवजागरण के पुरोधा-स्वामी दयानन्द, पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी, श्रद्धानन्द जीवनकथा, राजस्थान के आर्य महापुरुष।

५. आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ- आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान्, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्यसमाज का अतीत और वर्तमान, आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार, आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय, आर्यसमाज का इतिहास-पाँच खण्ड का विवेचन, आर्यसमाज के बीस बलिदानी।

६. स्वामी दयानन्द के ग्रंथों का संपादन- चतुर्वेद विषय सूची, ऋग्वेद के प्रारंभिक २२ मन्त्रों का भाष्य, दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह, दयानन्द उवाच, महर्षि दयानन्द की आत्मकथा, उपदेश मंजरी, पंडित लेखराम रचित स्वामी दयानन्द का जीवनचरित।

७. अन्य ग्रन्थ- बालकों की धर्म शिक्षा, पंडित रुद्र दत्त शर्मा ग्रंथावली भाग १, शुद्ध गीता, दयानन्द दिग्विजयार्क, कविरत्न प्रकाशचन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ, पंडित महेन्द्र प्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ, स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ, श्रद्धानन्द ग्रन्थावली ६ भाग, ऋषि दयानन्द प्रशस्ति, श्री दयानन्द चरित।

८. विभिन्न ग्रन्थ- विद्यार्थी जीवन का रहस्य, ब्रह्मवैवर्त पुराण की आलोचना, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला, आर्य लेखक कोष-१२०० आर्यविद्वानों का लेखन परिचय।

९. सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थ- ज्ञानदर्शन-एकादश समुल्लास की व्याख्या, विश्व धर्म कोष-सत्यार्थ प्रकाश , हिन्दू धर्म की निर्बलता।

१०. अनूदित ग्रन्थ- श्रीमद्भागवत (गुजराती), मीमांसा दर्शन (गुजराती), आर्यसमाज-लाला लाजपत राय (अंग्रेजी), श्रद्धानन्द ग्रन्थावली- कांग्रेस एण्ड आर्यसमाज एण्ड इट्स डेट्रेक्टर्स, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी- लाला लाजपत राय कृत का हिन्दी अनुवाद, सूरज बुझाने का पाप (गुजराती)।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में १००० के करीब शोधपूर्ण लेख भी शामिल हैं।

डॉ. भारतीय जी की साहित्य साधना करीब एक लाख पृष्ठों से अधिक है और ५० से अधिक वर्षों की साधना और तप का परिणाम है। इस अवसर पर मैं केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी से डॉ. भारतीय जी की स्मृति में देश के शीर्ष विश्वविद्यालय में उनकी स्मृति में चेयर स्थापित करने की विनती करता हूँ। इस चेयर से उनके द्वारा लिखित सकल साहित्य को न केवल सुरक्षित किया जाये अपितु उस पर शोधार्थी शोध भी करें।

पारस्परिक अभिवादन

जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से मिलता है, तो आपस में मिलने पर उन के मन में एक स्वाभाविक इच्छा होती है, कि हम एक दूसरे का आदर करें। जिससे परस्पर प्रसन्नता,

> मनुस्मृति २/१२० में इसी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है-
>
> **ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविर आयति।**
> **प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते।।**
>
> विद्या, आयु में वृद्ध एवं पूज्य के आने पर सामान्य व्यक्ति के हृदय में एक हलचल आरम्भ हो जाती है और आगन्तुक का स्वागत करने के पश्चात् ही वह शान्त होती है।

सम्मान, स्वागत, अभिवादन की भावना व्यक्त हो। अतः सभी देशों, वर्गों, धर्मों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द या शारीरिक चेष्टा की जाती है जिससे परस्पर सत्कार और अपनापन अभिव्यक्त होता है। जैसे कि पाश्चात्य पद्धति के अनुसार कुछ Good morning, evening, night हैलो, हाय आदि शब्द बोलते हैं, जिनका भाव है कि प्रातःकाल अच्छा हो, सायंकाल, रात अच्छी हो अर्थात् जिस समय हम मिल रहे हैं, वह अच्छा हो। मुस्लिम-सलामालैकुम, वालैकुम सलाम और सिख- सत श्री अकाल बोलते हैं जो भगवान की ओर संकेत करता है।

हिन्दू-जयराम, सीताराम, राम-राम, जय कृष्ण आदि, तो और कुछ जय हिन्दू, जय जगत् आदि शब्द बोलते हैं। जिनमें व्यक्ति विशेष एवं देश विशेष का स्मरण तथा विजय की कामना है, जो कि सभी के लिए एक सी अभीष्ट एवं उपयुक्त नहीं और न ही इन शब्दों से अभिवादन की भावना अभिव्यक्त होती है। पा लागन, दण्डवत्, आदि शब्द केवल छोटे ही बड़ों के प्रति या शिष्य गुरु के प्रति वा सेवक मान्य के

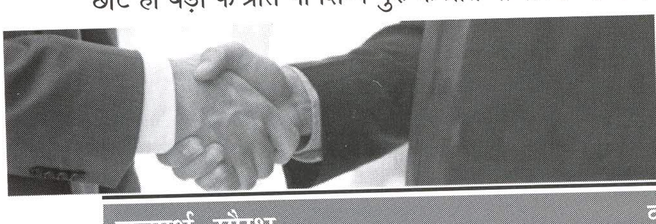

लिए बोल सकता है, पर सब इनका प्रयोग नहीं कर सकते हैं। कई इस समय परस्पर हाथ मिलाते या हाथ, सिर आदि चूमते हैं। इस प्रकार अभिवादन के लिए अनेक प्रकार के शब्द और ढंग प्रचलित हैं।

वस्तुतः इस समय अवसर के अनुरूप ऐसा शब्द होना चाहिए, जिसका सभी समान रूप से प्रयोग कर सकें तथा उससे पारस्परिक अभिवादन की भावना भी स्पष्ट हो।

आपस के अभिवादन के लिए महर्षि दयानन्द ने निम्न विचार व्यक्त किए हैं-

बड़ों को मान्य दे, उनके सामने उठकर जाके उच्चासन पर बैठावे। **प्रथम "नमस्ते" करे।** - सत्यार्थ प्रकाश समु. २, पृ. ३५

१००.**नमस्ते**- मैं तुम्हारा मान्य करता हूँ। - आर्य्योद्देश्यरत्नमाला

यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि 'पूजा' शब्द का अर्थ सत्कार है। और दिन-रात में जब-जब प्रथम मिलें वा पृथक् हों, तब-तब प्रीतिपूर्वक **'नमस्ते'** एक दूसरे से करें।
- सत्यार्थ, समु. ४, पृ. ६६

जब-जब प्रातः सायं वा परेदश से आकर मिलें तब-तब **'नमस्ते'** इस वाक्य से परस्पर नमस्कार कर स्त्री पति.....।
- संस्कार विधि विवाह प्रकरण

इस से उत्तम **'नमस्ते'** यह वेदोक्त वाक्य अभिवादन के लिए नित्य प्रति स्त्री पुरुष, पिता पुत्र अथवा गुरु शिष्य आदि के लिए है। प्रातः सायं अपूर्व समागम में जब-जब मिलें तब-तब इसी वाक्य से परस्पर वन्दन करें।' - संस्कारविधि की टिप्पणी

मनुस्मृति ४/१५४ के श्लोक का अर्थ करते हुए संस्कार विधि में लिखा है, कि- 'सदा विद्यावृद्धों और वयोवृद्धों को **नमस्ते** अर्थात् उनका मान्य किया करे। जब वे अपने समीप आवें तब उठकर मानपूर्वक ले अपने आसन पर बैठावे और हाथ जोड़ के आप समीप बैठे, पूछे हुए का उत्तर देवे, और जब जाने लगें तब थोड़ी दूर पीछे-पीछे जाकर **नमस्ते कर विदा किया करे।'** - गृहस्थाश्रम प्रकरण

इन उद्धरणों से स्पष्ट होता है, कि पारस्परिक अभिवादन के लिए महर्षि दयानन्द ने 'नमस्ते' शब्द का निर्देश किया है। जो

कि अवसर के अनुरूप, तर्कसंगत, शास्त्रसम्मत और आधारभूत मूल भावना से हर तरह से मेल खाता है। अभिवादन के अन्य शब्दों की अपेक्षा **'नमस्ते'** शब्द इस लिए भी सुसंगत है, कि इसका अर्थ अवसर के अनुरूप है, जिसको हम प्रत्येक प्रकार से मौके की बात कह सकते हैं। क्योंकि यह एक दूसरे के सत्कार का अवसर है, अतः इस अवसर के अनुरूप 'नमस्ते' शब्द ही अधिक उपयुक्त है। जैसे कि शिक्षा के समय शिक्षावाचक और खान-पान से सम्बद्ध शब्द ही सुसंगत कहे जा सकते हैं।

नमस्ते करते हुए छोटा बड़ों के प्रति हाथ जोड़ता है और उनको हृदय के पास लाता है तथा कुछ सिर झुका कर 'नमस्ते जी' शब्द का प्रयोग करता है और दो समान भी ऐसा ही व्यवहार करते हैं।

इसका भाव यह है- **'अपने मस्तिष्क की समस्त बुद्धि, अपने बाहुओं की समस्त शक्ति, अपने हृदय के समस्त प्रेम के साथ मैं आपका नमन करता हूँ।** विद औल माई इन्टेलैक्ट इन माई ब्रेन, विद औल माई पावर इन माई आर्म्स एण्ड विद औल माइ लव इन माइ हार्ट, आई बाऊ अन टू दी। बड़ा आशीर्वाद के रूप में अपने हाथ से उपयुक्त निर्देश करता है। नमस्ते दो पदों का मेल है, नमः शब्द का यहाँ अर्थ या भाव है- आदर, सत्कार, अभिवादन और ते=उसकी ओर संकेत करता है, जिस अपेक्षित का स्वागत किया जाता है। **इस प्रकार नमस्ते एक पूर्ण शब्द, वाक्य, समस्तपद है तथा इसका अभिवादन के लिए भारत के प्राचीन साहित्य में भरपूर प्रयोग मिलता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने अभिवादन के लिए 'नमस्ते' के प्रयोग का विधान किया है।**

नमस्ते शब्द को सभी एक समान रूप से व्यवहार में ला सकते हैं। कहीं भी यह अट-पटा प्रतीत नहीं होता।

> अभिवादन के लिए हिन्दू समाज में जय श्री राम, जय श्री कृष्ण प्रचलित हैं। जैसा कुछ लोग मानते हैं कि आर्य समाज इनका निषेध करता है सही नहीं है। वस्तुतः यह जयकारे हैं। और हम भी सब के साथ मिलकर इन जयघोषों को उच्च स्वर में करने में तत्पर हैं। बात इतनी सी है ये परस्पर अभिवादन के लिए उपयुक्त नहीं हैं। जिस प्रकार अभी कुछ वर्षों से कुछ लोग 'ओ३म्' का प्रयोग करने लगे हैं। **यह भी अभिवादन के लिए उपयुक्त नहीं है।** अभिवादन के लिए तो 'नमस्ते' (नमस्कार नहीं) ही सर्वप्रकार से उपयुक्त है। -सम्पादक

जैसे कि प्रेम और प्यार शब्द अपने आप में एक ही हैं, पर अवस्था, अवसर और आपस के रिश्ते के भेद से इसका प्रकरण के अनुसार ही भाव लिया जाता है। भाई-बहन का

प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, पिता-पुत्र का प्रेम, माता-पुत्री का प्यार, मित्रों का प्यार आदि। प्रेम की तरह ही नमस्ते की भी व्यवहार में स्थिति होती है। अतः जहाँ विद्या एवं आयु में छोटा अपने से बड़े के प्रति 'नमस्ते जी' शब्द का प्रयोग कर सकता है, वहाँ बड़ा भी छोटे के प्रति 'नमस्ते' का व्यवहार कर सकता है, तब इसका भाव आशीर्वाद के रूप में होगा। श्रीराम ने सीता के लिए, कठोपनिषद् में आचार्य ने नचिकेता के लिए, याज्ञवल्क्य ने जनक के प्रति और श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र के प्रति नमस्ते शब्द का प्रयोग किया है। अतः बड़ा भी छोटे के प्रति इसका उच्चारण कर सकता है।

इसके साथ सारा भारतीय साहित्य भी इसका साक्षी एवं समर्थक है। वह चाहे वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, वेदांग आदि वैदिक वाङ्मय हो या रामायण, महाभारत और लौकिक संस्कृत का काव्य साहित्य हो, वहाँ सर्वत्र अभिवादन के लिए नमस्ते शब्द का व्यवहार मिलता है। इसीलिए ही गुरुग्रन्थ में ९८ बार नमस्ते शब्द आता है। इस विवेचन से स्वतः स्पष्ट हो जाता है, कि जीवन को सत्य, शिव, सुन्दर बनाने के लिए जीवन के भिन्न-भिन्न अवसरों पर जरूरत के अनुसार महर्षि जीवन का एक सुसंगत जीवनपथ दर्शाते हैं।

❑❑❑

साभार- सुसंगत जीवन पथ

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब

एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

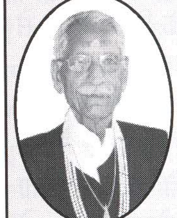

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सदा करे संघर्ष जो,
सबको गले लगाता है।
मिलता उसे ही सबका स्नेह,
मंजिल अपनी पाता है।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

गीता आर्यसमाजी हो गई

प्रबुद्ध-सुधी पाठकों को यह शीर्षक आश्चर्यचकित करने वाला प्रतीत होगा, किन्तु यह शीर्षक बहुत पुराना है। जब पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर पधारे हुए थे, प्रातः काल गंगा के तट पर बैठकर तन्मयता से वे गीता का पाठ; पारायण कर रहे थे। इस दृश्य को देखकर एक पौराणिक व्यक्ति जो पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी को पहचानते थे, उन्होंने अपने एक आर्यसमाजी मित्र को संकेत करते हुए कहा कि- जादू वह जो सिर पर चढ़ कर बोले, देखो तुम्हारे आर्यसमाज के धुरन्धर विद्वान् भी कितनी तन्मयता से गीता का पाठ कर रहे हैं। वह आर्यसमाजी व्यक्ति पण्डित जी को गीता का पाठ करते हुए देखकर स्तब्ध रह गया और वह इतना विचलित हो गया कि पाठ करते हुए ही श्री पण्डित जी के निकट जाकर उनसे कहने लगा कि- क्या पण्डित जी आप पौराणिक हो गये? पण्डित जी ने तत्काल उससे पूछा कि- तुमको किसने कह दिया कि मैं पौराणिक हो गया? तब प्रश्नकर्त्ता ने कहा कि- यह तो प्रत्यक्ष ही है कि आप वेद, सत्यार्थ प्रकाश आदि का पाठ न करके गीता का इतनी तन्मयता से पाठ कर रहे हैं। **'तो गीता का पाठ करने मात्र से तुम्हारी दृष्टि में मैं पौराणिक हो गया, तुम्हें ज्ञात नहीं गीता आर्यसमाजी हो गयी है, क्योंकि इसका पाठ बुद्धदेव कर रहा है।'** प्रश्नकर्त्ता महोदय अट्टहास करने लगे और उनके पौराणिक मित्र पर जो आघात हुआ उससे वे अति लज्जित हुए।

इस घटना को लिखने का तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार से पण्डित जी ने शतपथ ब्राह्मण के उद्धार का बीड़ा उठाया था, उसी प्रकार से उन्होंने गीता के उद्धार का भी संकल्प लिया था और उनका नियम था कि 'जब तक मैं गीता की वैदिक व्याख्या नहीं लिख लूँगा, तब तक इसका प्रतिदिन पाठ करता रहूँगा।' इसका सत्यापन माता शकुन्तला गोयल; मेरठ जो एक सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्यसमाज की कार्यकर्त्री थीं, जो सन् १९५१ में मेरठ में सम्पन्न होने वाले सार्वदेशिक आर्यमहासम्मेलन की स्वागताध्यक्षा तथा मॉरीशस में होने वाले आर्य महिला सम्मेलन की अध्यक्षा भी थीं, उन्होंने बताया कि - 'जब भी कभी पण्डित जी मेरठ कार्यक्रम में आते थे तो हमारा घर ही उनका आवास होता था। मैंने उनको तीन बजे प्रातः उठकर गीता का पाठ करते हुए बहुधा देखा है।' सन् १९६४ में जब गीता-भाष्य पूर्ण हो गया तभी उन्होंने अपने नियमित गीतापाठ के क्रम का परित्याग किया।

गीता पर अनेक भाष्य हुए। आद्य शंकराचार्य जी महाराज के भाष्य से पहले भी गीता पर अनेक भाष्य थे, इसका ज्ञान हमें श्री आचार्य जी के भाष्य से ही होता है, किन्तु आश्चर्य है कि आचार्य जी के भाष्य से पूर्ववर्त्ती भाष्य हमें उपलब्ध नहीं होते। पूज्य स्वामी जी ने भी मल्लिनाथ के भाव को जो उन्होंने महाकवि कालिदास के टीकाकारों पर बिगड़ते हुए लिखा है-

भारती कालिदासस्य दुर्व्याख्या विषमूर्च्छिता।
एषा संजीवनी टीका तामद्योज्जीवयिष्यति।।

इन्हीं भावों से ओत-प्रोत लिखा है कि -'गीता के जितने भी अपभाष्य हुए हैं, उनका समाधान करते हुए मैं यह भाष्य लिख रहा हूँ।'

अस्तु। जब स्वामी जी ने गीता के आर्यसमाजी होने का डिण्डिम घोष किया तो आर्य पुरुषों की जिज्ञासा वृद्धि को प्राप्त हुई कि 'अन्ततः वे कौन-सी पंक्तियाँ हैं, जिनका पण्डित जी ने वैदिक अर्थ किया है', तो हम उद्धृत कर रहे हैं। उनके प्रथमाध्याय की व्याख्या का एक स्थल- 'महाभारत का युद्ध भारत के इतिहास की एक सच्ची घटना है, कपोल-कल्पना नहीं। उस घटना का प्रयोग महाकवि वेदव्यास जी ने मनुष्य को धर्म का सच्चा स्वरूप दिखाने के लिए अपने काव्य में किया है, और दैवी सम्पत्ति की सेना के संचालक का

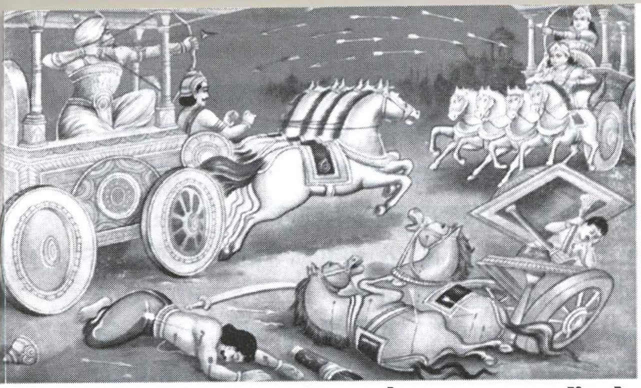

स्वरूप योगिराज कृष्ण को दिया है। भाव कृष्ण वार्ष्णेय के, शब्द कृष्ण द्वैपायन के, घटना इतिहास की। 'अहो लोकोत्तरः संगमः।' यहाँ इन तीन-चार पंक्तियों के द्वारा ही पण्डित जी ने गीता को अनैतिहासिक कहने वालों के दुर्ग को ध्वस्त कर दिया, अन्यथा आधुनिक गीता के व्याख्याता तो अपनी मनमानी, मिथ्याकल्पना करते रहते थे। अब गीता के जो श्लोक पौराणिकता की पुष्टि में उद्धृत किये जाते थे-

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत॥ - १/४०

इसका अर्थ करते हुए तथा उसकी विशेष व्याख्या करते हुए श्री पण्डित जी ने लिखा है-'उत्तम कुलों के क्षय हो जाने पर कुल-परम्पराएँ नष्ट हो जाती हैं, और उन परम्पराओं के नष्ट होने पर अधर्म सम्पूर्ण कुल को दबा लेता है।'

विशेष व्याख्यान- 'हर उत्तम कुल की कुछ पवित्र परम्पराएँ और एक न एक लोक-कल्याणकारी संकल्प होता है, जो हर संकट में उन्हें बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है। ये सब कुल-धर्म कहलाते हैं, किन्तु कुल के नेताओं के मारे जाने पर ये सनातन कुल-धर्म नष्ट हो जाते हैं। धर्म के नष्ट होने पर जब उस कुल के सदस्यों के सामने बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाला कोई लक्ष्य नहीं रहता तो सारे कुल में स्वार्थ और आपाधापी का बोलबाला हो जाता है और अधर्म सारे कुल को दबा लेता है।'

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः॥ - १/४१

हे कृष्ण! अधर्म के अधिक बढ़ जाने पर कुल की स्त्रियाँ दूषित हो जाती हैं। हे वार्ष्णेय! स्त्रियों के दूषित हो जाने पर वर्णसंकर उत्पन्न होते हैं।

विशेष व्याख्यान- हे कृष्ण! इस संसार में धर्म तथा उच्च भावनाओं का अन्तिम दुर्ग 'स्त्री-हृदय' है। किन्तु जब चारों ओर अधर्म का बोलबाला हो जाता है तो यह अन्तिम दुर्ग भी टूट जाता है। एक तो चुनाव का क्षेत्र संकुचित हो जाने से विवाह भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार नहीं हो पाते और गुप्त व्यभिचार भी बहुत फैल जाता है, तो चारों ओर स्त्रियों के दूषित हो जाने से हे वार्ष्णेय! वर्णसंकर फैल जाता है।

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः॥ - १/४२

जहाँ वर्णसंकर विवाह होता है अथवा व्यभिचार होता है, वहाँ परस्पर गुण, कर्म, स्वभाव न मिलने से कुल नरक बन जाता है और इस प्रकार के कुलघाती और वह कुल जहाँ इस प्रकार के लोग हों, नरक जीवन बनाने के लिए ही साधन करते हैं और जब युद्ध में जवान लोग मारे जाते हैं तो बूढ़े लोगों को आपातकाल में वानप्रस्थाश्रम छोड़कर घर सम्भालना पड़ता है तथा जीवन भर की सैनिक-वृत्ति छोड़कर लकड़ियों की टाल खोलने जैसा कार्य करना पड़ता है। इस प्रकार वे वर्ण और आश्रम दोनों ओर से पतित होते हैं, क्योंकि उन बूढ़ों और छोटे बच्चों को पिण्ड तथा उदक अर्थात् अन्न और जल देने वाला कोई नहीं रहता। यहाँ आपने गीता के पिण्ड दान के समर्थक श्लोकों की व्याख्या पण्डित जी द्वारा की हुई, पढ़ी। अब गीता के वे गूढ़-स्थल जिनकी कि पूर्ववर्त्ती आचार्यों ने तथा परवर्त्ती हिन्दी के गीता व्याख्याकारों ने व्याख्या की है, वह अनावश्यक, अतिविस्तृत, खींचातानी से परिपूर्ण तथा अप्रासंगिक है। उसकी व्याख्या पण्डित जी के द्वारा लिखी हुई देखें -

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः॥
अकर्मणश्च बोद्धव्यम् कर्मणः गतिः गहना॥ - ४/१७

मनुष्य को कर्म का भी ज्ञान प्राप्त करना है। जैसे- क्षत्रिय का धर्म है आततायी को मारना, यह कर्म का ज्ञान है। विकर्म को भी जानना है, जैसे- कोई पागल आततायी हो जाये तो उसको बाँधना तथा चिकित्सा करनी, किन्तु प्राण दण्ड नहीं देना, किन्तु यदि भूल से उसे प्राण दण्ड दे दिया तो यह विकर्म हुआ। इस विकर्म अर्थात् विपरीत कर्म का भी ज्ञान होना चाहिए। फिर अकर्म का भी ज्ञान होना चाहिए। यदि कोई आलस्यवश अकर्मण्य होकर पड़ रहा है तो यह अनुचित अकर्मण्यता है, किन्तु यदि कोई मनुष्य क्षमा करने से सुधर सकता हो तो उसे दण्ड न देना शुभ अकर्मण्यता है। इसका ज्ञान अकर्म का ज्ञान है। **कर्म, अकर्म तथा विकर्म इन तीनों का ज्ञान ठीक-ठीक होना चाहिए**। इस प्रकार कर्म, अकर्म तथा विकर्म तीनों का यथार्थ ज्ञान होने से कल्याण होता है। इस कर्म की गति का ठीक ज्ञान होना बड़ा कठिन है। इसलिए कहा '**कर्मणः गतिः गहना**'।

कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्॥ - ४/१८

हर शुभ कर्म किसी अवस्था-विशेष में अशुभ कर्म हो जाता

है।

उदाहरणार्थ- यदि कोई सिपाही राष्ट्र के किसी दुर्ग की अथवा नाके की रक्षार्थ पहरा दे रहा हो, तो उस समय संध्योपासन की वेला प्राप्त होने पर सिपाही का संध्योपासन में लीन हो जाना घोर अशुभ है, सो इस कर्म में कब अकर्मता आ गई, यह जो जानता है तथा अकर्म में कर्म को जानता है, जैसे शत्रु अपनी रक्षा के लिए गौवें आगे करके राष्ट्र का नाश करने आवे तो उस समय गोहत्या अशुभ-कर्म में कर्त्तव्य अर्थात् शुभ-कर्मत्व आ जाता है। जैसे- अर्जुन के लिए अन्याय का पक्ष लेकर सामने आए गुरु तथा पितामह का वध अकर्म में कर्म हुआ। जो इस तत्त्व को देख ले, वही मनुष्यों में बुद्धिमान् मनुष्य है। उसे ही युक्तियुक्त मनुष्य समझना और वह पूर्ण कार्य करता है, क्योंकि उसने कर्म के पूरे रूप को -उत्सर्गापवाद दोनों को जान लिया।

यस्य सर्वे समारम्भा: कामसंकल्पवर्जिता:।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहु: पण्डितं बुधा:।। - ४/१९

हे अर्जुन! मनुष्य को कर्म से अकर्म में तथा अकर्म से कर्म में आसक्ति घसीट ले जाती है। राष्ट्र पर शत्रुओं के आक्रमण होने पर शत्रु की ढाल बनी हुई गौवों को मारना यद्यपि देखने में अकर्म है, किन्तु वास्तव में भविष्य में आने वाले लाखों गो-भक्तों और गौओं के वध को बचाने का साधन होने के कारण वह प्रत्यक्ष अकर्म गोवध वास्तव में कर्म है, किन्तु यह बात गोरक्षा में आसक्त होने वाले को नहीं सूझती। इसलिए जिस मनुष्य के सम्पूर्ण कार्यारम्भ काम संकल्प अर्थात्

व्यक्तिगत सुख-दु:ख की कामना के संकल्प से वर्जित होते हैं, **उसे यह यथार्थ ज्ञान हो जाता है कि जो कर्त्तव्य दीखता है, वह कब परित्याज्य है? और जो कर्म अकर्त्तव्य दीखता है, वह कब किन अवस्थाओं में ग्राह्य है?** इसलिए उसके कर्मों में फलासक्ति का अंश यथार्थ-ज्ञानरूपी अग्नि से जलकर भस्म हो जाता है। और वह हर कर्म को विवेकयुक्त सीमा तक करता है। इस प्रकार के ज्ञानाग्निदग्ध-कर्मा मनुष्य को बुद्धिमान् लोग पण्डित कहते हैं।

कुछ और विवादास्पद श्लोकों के भी अर्थ जिसका वैदिक भाष्य पूज्य पण्डित जी ने किया है, इसका भी एक निदर्शन स्वरूप लीजिए-

अग्निर्ज्योतिरह: शुक्ल: षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जना:।। - ८/२४

जिस प्रकार सृष्टि तथा प्रलय को ब्रह्म-दिन तथा ब्रह्म-रात्रि का नाम दिया है इसी प्रकार मनुष्य जीवन को एक वर्ष मान लें तो यौवन तक उसका शुक्ल-पक्ष है तथा वृद्धावस्था के आरम्भ से रात्रि है तथा मृत्यु अमावस्या है। इसी प्रकार जब उसके हृदय में प्रभु का प्रेम तथा ज्ञान का प्रकाश हो, वीर्य की ज्ञानाग्नि में आहुति होती हो, वह दिन है तथा जब उसकी कामेच्छा अथवा शयनेच्छा जागती हो, वह रात्रि है। जीवन भर जितना समय उसने उन्नति की ओर जागने में लगाया हो, वह उसका उत्+तर+अयन है तथा जब वह नानाविध भोगादि समृद्धि की ओर जाता हो, वह सकाम जीवन का काल दक्षिणायन है। हो सकता है बहुत से मनुष्यों में उत्तरायण कभी आता ही न हो, परन्तु ये दो परिभाषाएँ हैं, इन्हें समझने पर ही यह श्लोक समझ में आएगा। अग्नि की ज्वाला सदा ऊपर को उठती है। इसी प्रकार ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्यत्व अथवा अन्य भी कोई लोक-कल्याणकारी व्रत मनुष्य ने अपने जीवन में लिया है, वह उसे परमात्मा से मिलाता है तथा उसके वीर्य की रक्षा करता है। इस प्रकार वीर्य (स्थूल शरीर का सूर्य), ज्ञान (सूक्ष्म शरीर का सूर्य) तथा परमात्मा (सारे ब्रह्माण्ड का सूर्य) इन तीनों की ओर ले जाने वाली आग जब किसी के हृदय में दहक रही हो, वह अग्नि ज्योति का काल है। उसके अन्दर जब ज्ञान का प्रकाश हो वह दिन का समय है। युवावस्था वाली स्वास्थ्य-सम्पत्ति हो; चाहे आयु कुछ भी हो, वह शुक्ल पक्ष है। मन में ऊँचे से ऊँचा और अधिक ऊँचा उठने का दृढ़ संकल्प हो वह उत्तरायण काल है। इस काल में मृत्यु को प्राप्त हुए ब्रह्मवित् जन ब्रह्म के पास जाते हैं। दूसरी ओर धुँआ यद्यपि आग की गर्मी तथा वायु के वेग से उपर उठता है तथापि शनै: शनै: नीचे आकर किसी वस्तु पर जम जाता है। इसी प्रकार आलस्यमयी तमोवृत्ति, आराम-पसन्द मनोवृत्ति जो धक्का देने से बड़ी

कठिनता से ऊपर उठे, वह धूम है। ऐसी धूमिल ज्योति हो, अज्ञान की रात्रि हो, वृद्धावस्था की चेष्टाहीनता हो; चाहे आयु यौन की ही हो, अर्थात् कृष्ण पक्ष हो तथा नाना काम-भोग रूप समृद्धि की अभिलाषा बनी हो, वह दक्षिणायन है। उसके लिए कहा-

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।। - ८/२५

धूमिल ज्योति हो, रात्रि की वेला हो अर्थात् तमोगुण का प्राबल्य हो, कृष्णपक्ष अर्थात् मन्द स्वास्थ्य का बुढ़ापा हो, तो सूर्य ज्योति नहीं किन्तु चन्द्र-ज्योति प्राप्त हुई। उनकी प्रभु-भक्ति चन्द्रमा के समान कीर्ति, धन आदि अथवा सन्तान की कामना से प्रकाशित है। इसलिए इस दक्षिणायन काल में मृत्यु को प्राप्त योगी फिर कर्त्तव्य पालन से विमुख होकर बारम्बार फिर-फिर साधना करने के लिए विवश होता है (**पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।** - ६/४४) यह आवृत्ति-मार्ग है।

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमाँस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।। - १०/१६

हे कृष्ण! योगविद्या से आत्मा को बहुत विभूतियाँ प्राप्त होती हैं। वे दिव्य हैं अर्थात् देवाधिदेव भगवान के चिन्तन से प्राप्त होती हैं। आप कहते हैं कि मैंने भी वहीं से पाई हैं। आप पूर्ण योगी हैं, अपनी योग-विभूति के बल से जिस लोक-लोकान्तर का ज्ञान प्राप्त करना चाहें तुरन्त वहाँ पहुँचकर जान लेते हैं। उन विभूतियों के भण्डार भगवान का साक्षात् करने से ही वे विभूतियाँ आपको प्राप्त हुई हैं। सो जिन विभूतियों से वह विश्वव्यापी ज्ञान आपको प्राप्त हुआ है जिससे आप जिस लोक-लोकान्तर में पहुँचना चाहें पहुँच जाते हैं, उनका वर्णन पूर्ण रूप से मुझे भी करके बताइये।

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे।। - १०/१९

हे कुरश्रेष्ठ! यह तुमने सच कहा-आत्मा को जो विभूति मिलती है, वह दिव्य होती है अर्थात् देवाधिदेव भगवान की कृपा से मिलती है। पर यह तो देखो कि उस प्रभु की विभूतियों का तो अन्त ही नहीं, प्रभु की विभूतियों का तो कहना ही क्या! मैंने उस देवाधिदेव से जो विभूतियाँ पाई हैं उनका विस्तार करने लगूँ तो उनका ही अन्त नहीं। इसलिये वह प्रभु मुझे क्या उपदेश करता है? मैं उसे किन विभूतियों में देखता हूँ? यह उसके बड़े-बड़े प्रधान गुणों के आधार पर तुझे सुनाता हूँ।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। - १८/६६

हे अर्जुन! तुझे यह सन्देह कैसे हो गया कि मैं तुझे पाप करने की सलाह भी दे सकता हूँ, पाप करने की सलाह देने की बात तो दूर रही, तू निश्चय रख कि तेरे हृदय में कोई पाप वासना उठती होगी तो उसे भी मैं उभरने नहीं दूँगा। इसलिये तेरी तो मैं भक्त और सखा होने के कारण व्यक्तिगत रूप से जिम्मेवारी लेता हूँ, तू और सब धर्म छोड़कर एक ही धर्म पकड़ ले कि मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे सब प्रकार के पाप भावों से (पाप फलों से नहीं) छुड़ा दूँगा। तू दुःख मत मान।

इस प्रकार से गीता के आर्यसमाजी होने का स्वामी समर्पणानन्द जी के भाष्य से परिलक्षित होता है। विशेषरूप से तो हमारे जिज्ञासु पाठक उनके भाष्य से ही अपनी जिज्ञासा का शमन करने में समर्थ होंगे। मैंने तो उनके १२३वें जन्मदिवस पर एक स्थाली पुलाकन्यायेन परिचय मात्र प्रदान किया है। उनका शतपथ का भाष्य प्रथम, द्वितीय, तृतीय काण्ड तथा उसकी भूमिका के रूप में शतपथ में एक पथ व अद्भुत कुमारसम्भव आदि रचनाएँ प्राचीन ऋषियों के वेदव्याख्या के मर्म को उद्घाटित करती हैं। इस अवसर पर हम ऋषि दयानन्द के भाष्यों के कवचरूप में उनके पंचयज्ञप्रकाश, गीताभाष्य, शतपथ-ब्राह्मणभाष्य, ऋग्वेद मण्डल मणिसूत्र एवं कायाकल्प आदि ग्रन्थों का अध्ययन, मनन, चिन्तन करें तो वैदिक साहित्य को समझने में वैदिक आलोक का कार्य करेंगे।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
कुलाधिपति- गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी
भोला-झाल, मेरठ (उ.प्र.) २५०५०१

❑❑❑

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के
मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक
नजदीक, तत्कालीन शैली का
संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र
कीमत
₹ 45
में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

श्यामजी कृष्ण वर्मा जयन्ती पर विशेष

क्रान्ति पुत्र श्यामजी कृष्ण वर्मा

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्टूबर १८५७ ई. को गुजरात प्रान्त के भुज में हुआ था। १८५७ में स्वतंत्रता

आन्दोलन की प्रथम क्रान्ति हुई थी जिसका प्रभाव श्यामजी कृष्ण वर्मा के जीवन पर पड़ा और वे क्रान्तिपुत्र हो गए। श्यामजी उच्च्व कोटि के वक्ता लेखक और विचारक थे, देशभक्ति की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी। भारत में अंग्रेजी शासन के उन्मूलन के लिए उन्होंने देश के युवकों को संग्रहित कर उन्हें देशभक्ति का पाठ पढ़ाने के लिए क्रान्तिकारी भावना उत्पन्न करने के लिए इंग्लैण्ड में इण्डिया हाऊस की स्थापना कर कई योजनायें चलाईं। स्वाधीनता आन्दोलन को उचित दिशा में ले जाने के लिए उन्होंने कांग्रेस को अंग्रेज भक्त नेताओं से मुक्त कर लाल-बाल-पाल के राष्ट्रीय नेतृत्व को स्थापित करने हेतु अथक प्रयत्न किया था। विदेश में रहते हुए उन्होंने अन्य देश में चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन के नेताओं से सम्पर्क कर सहयोग लिया। **स्वामी दयानन्द के प्रथम शिष्य होने के नाते स्वराज्य के कार्य को उनके बाद भी आगे बढ़ाने का दायित्व उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया।** श्यामजी भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के महान् शिल्पी थे। भारत की स्वतंत्रता के लिए मातृभूमि से सहस्रों मील दूर रहकर उन्होंने कार्य किया। अपने विलक्षण पांडित्य, प्रशासक के रूप में प्राप्त कूटनीति अनुभव और महान् आर्थिक सम्पदा को श्यामजीकृष्ण वर्मा ने राष्ट्र हितार्थ न्यौछावर किया। वे असहयोग आन्दोलन के प्रणेता थे।

मात्र १३ वर्ष की अवस्था में श्यामजी कृष्ण वर्मा का सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ हुआ। अल्पायु में ही मातृहीन हुए श्यामजी अपने ननिहाल में पल रहे थे। आर्थिक परेशानियों से घिरे श्यामजी के पिता कृष्ण जी वर्मा मुम्बई में थे। मिडिल में सर्वप्रथम आने से प्रतिभाशाली बालकों की खोज में रत सुधार आन्दोलन के लोगों ने इन्हें संस्कृत पाठशाला तथा अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश करा दिया। पंडित विश्वनाथ शास्त्री ने इन्हें अष्टाध्यायी कंठस्थ करा दी। अंग्रेजी स्कूल में सर्वप्रथम आने से उन्हें मुम्बई के श्रेष्ठतम विद्यालय एलिफिन्सटन कॉलेज में प्रवेश मिल गया। युवक श्यामजी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व में अत्यन्त निखार आ गया। मुम्बई के नामी सेठ छबीलदास लल्लूभाई की सुपुत्री भानुमती से उनका विवाह हुआ।

इसी कालखण्ड में आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती मुम्बई पहुँचे। समाज सुधार आन्दोलन को बल प्रदान करने के लिए वे पूरे देश का भ्रमण कर चुके थे। श्यामजी कृष्ण वर्मा मुम्बई में प्रवास के क्रम में स्वामी दयानन्द से मिले। इस मिलन ने श्यामजी को आर्य धर्म का प्रचारक बना दिया और उनकी छवि स्वामी जी के प्रमुख शिष्य के रूप में स्थापित हो गई।

स्वामी जी की मृत्यु ३० अक्टूबर १८८३ को हो गई। भारत को शक्तिशाली और स्वतंत्र राष्ट्र बनाने का स्वप्न लिए श्यामजी १८८४ में स्वदेश लौटे। राजे रजवाड़े उनका कार्य क्षेत्र बने। वे रतलाम, मेवाड़ जूनागढ़ और पुनः मेवाड़ के दीवान बने। एक प्रशासक के नाते उन्होंने रजवाड़ों के प्रशासन में चुस्ती लाने का कार्य किया। इस संदर्भ में उनका महत्वपूर्ण कार्य था देशभक्तों का प्रोत्साहन और सहायता। इस कालखण्ड में श्यामजी कृष्ण वर्मा और बाल गंगाधर

तिलक में राजनीति मित्रता सुदृढ़ हुई। १८६१ के बाद तिलक जी की संस्तुति पर श्यामजी ने महाराष्ट्र की अनेक संस्थाओं की आर्थिक सहायता की थी जिसमें चाफेकर बन्धुओं की संकीर्तन भी थी।

अंग्रेज उन दिनों भारतीय रियासतों पर राष्ट्रवादी प्रभाव से बेचैन थे। इन्दौर और बड़ौदा के शासकों को बदल दिया गया था। मेवाड़ का राज्य स्वामी दयानन्द का अनुयायी भी था और स्वाभिमानी भी था। महाराणा फतेहसिंह को लग रहा था कि अंग्रेज मेवाड़ के राज्य को अंग्रेजी राज्य में विलय कर देंगे। इसलिए उन्होंने १८६२ में श्यामजी कृष्ण वर्मा को रियासत की कौंसिल का कार्यकारी सदस्य बनाया और उनहें पूर्ण अधिकार दे दिए गए। लन्दन में श्यामजी के गहरे सम्बन्ध के कारण राज्य तो बच गया किन्तु उनके कर्नल कर्जन वायली से गंभीर मतभेद हो गए। १८६५ में जूनागढ़ के नवाब रसूल खां ने उन्हें जूनागढ़ बुला लिया। जूनागढ़ के दीवान के रूप में श्यामजी ने प्रशासनिक न्याय व्यवस्था में चुस्ती लाने का उपक्रम किया जिससे अंग्रेज अधिकारी इस राष्ट्रभक्त दीवान के विरुद्ध हो गए।

अंग्रेज अधिकारी के दबाव के कारण नवाब ने श्याम जी को १२ घण्टे में जूनागढ़ छोड़ने का आदेश दे दिया। १८६८ में श्यामजी लन्दन चले गए और राष्ट्रीय संघर्ष का सूत्रपात कर दिया। १६०७ में उन्होंने राजाओं को राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में साझीदार बनाने के लिए एक ठोस योजना रखी।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारतीयों में वैचारिक क्रान्ति बनाने के लिए लन्दन के प्रसिद्ध दार्शनिक सर हरबर्ट स्पेन्सर का समर्थन प्राप्त करने का यत्न किया। स्पेन्सर उन दिनों स्वतन्त्रता संग्राम के तीर्थंकर समझे जाते थे। जुल्म के विरुद्ध लड़ना जरूरी है नहीं तो मानसिक एवं व्यावहारिक हानि होना अवश्यम्भावी है, ऐसा हरबर्ट स्पेन्सर का मत था। १८ दिसम्बर १६०३ को हरबर्ट स्पेन्सर का देहान्त हो गया। स्पेन्सर के प्रति श्रद्धांजलि सभा में भाषण करते हुए उनकी स्मृति में भाषणमाला का प्रस्ताव रखा और प्रस्ताव स्वीकार होते ही एक हजार पाउण्ड के दान की घोषणा कर दी। बाद में सर स्पेन्सर एवं महर्षि दयानन्द के नाम से उन छात्रों को दो-दो हजार की छात्रवृत्तियाँ देना प्रारम्भ किया जो छात्र देश हित में काम करने का वादा करता था और अंग्रेजी सरकार से किसी भी प्रकार का पद न लेने का वचन देता था। छात्रवृत्तियों की यह योजना भारतवर्ष में अत्यन्त लोकप्रिय हुई। छात्रवृत्तियों के माध्यम से वीर सावरकर तथा लाला हरदयाल भी श्यामजी से जुड़ गए। महाराष्ट्र, बंगाल, पंजाब आदि प्रदेशों से युवक प्रतिभाएँ श्यामजी के पास एकत्र होने लगीं। भारतीय युवकों के उत्साह के अनुरूप ही छात्रवृत्तियों का परिमाण बढ़ने लगा। धीरे-धीरे महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, महारानी लक्ष्मीबाई, बहादुर शाह जफर, गणेश वासुदेव जोशी आदि वीरों के नाम पर बहुत से नवयुवक अन्य स्वतंत्र राष्ट्रों में गए। परिणामस्वरूप अनेक देशों के आन्दोलनकारियों से सम्पर्क सूत्र बढ़े और भारतवर्ष उग्र आन्दोलन का रूप धारण करने हेतु सन्नद्ध हो गया। भारतीय स्वतंत्रता के उद्घोष के रूप में श्यामजी ने १६०५ में इंडियन सोशियोलिस्ट नामक समाचार पत्र लन्दन से शुरू किया। पश्चात् इंडियन होमरूल सोसायटी की स्थापना की। इस सोसायटी का मुख्य उद्देश्य था भारत में ऐसी सरकार स्थापित करना जो पूर्णतया भारतीयों ने भारतीयों के हितार्थ भारतीयों के द्वारा बनाई गयी हो। श्यामजी के प्रयत्न से भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में ज्वार आ रहा था। अनेक

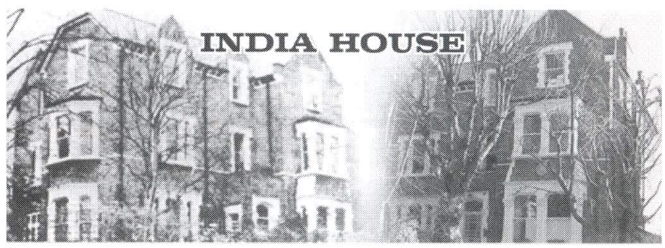

देशभक्त तैयार हो गए थे। राष्ट्रवाद के उत्कर्ष काल में १६०८ का वर्ष अभूतपूर्व था।

इसी वर्ष श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा एक विशाल भवन खरीदकर उसे भारत भवन या इंडिया हाउस के नाम से विख्यात किया गया जो आलीशान इमारत भारतीय देशभक्तों का स्वातन्त्र्य मंदिर बन गई। श्यामजी कृष्ण वर्मा के विचारों एवं कार्यों से भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में तूफानी दौर आरम्भ हो गया था। लन्दन के कंजरवेटिव पत्र, टाइम्स आदि श्यामजी पर सशस्त्र विद्रोह की प्रेरणा के आरोप लगाने लगे। ऐसी स्थिति में इंग्लैण्ड श्यामजी के लिए असुरक्षित हो चुका था। अतः उन्होंने होमरूल सोसायटी और देशभक्त समाज के मुख्यालय को लन्दन से स्थानान्तरित कर पैरिस बना लिया। इस समय तक श्यामजी की छवि भारतीय राष्ट्रवाद के सर्वमान्य नेता के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। दुर्भाग्यवश इसी समय अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के कारण फ्रांस, इंग्लैण्ड और ब्रिटेन में सद्भाव बढ़ता गया। श्यामजी की गतिविधियों को फ्रांस सरकार नापसन्द करती गई। १६१२ में अंग्रेज सम्राट एडवर्ड अष्टम के फ्रांस पधारने पर श्यामजी के निवास पर जासूस तैनात कर दिए गए और पुलिस का भारी बन्दोबस्त

कर दिया गया। इस हालत में श्यामजी ने पेरिस से आन्दोलन का केन्द्र बदलने का निश्चय किया और वे फ्रांस से जेनेवा चले गए। जेनेवा में अनुकूल परिस्थितियाँ थीं वहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन सूझबूझ से करने लगे। जर्मनी में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए बहुत समर्थन मिलने लगा। १९१४ में भारत समर्थक अन्तर्राष्ट्रीय समिति बन चुकी थी। लोकमान्य तिलक रिहा हो चुके थे। १७ जून १९१४ को श्यामजी ने उनकी रिहाई का स्वागत करते हुए उन्हें मंत्रणा के लिए जेनेवा आने का निमंत्रण दिया। १४ जुलाई १९१४ को जेनेवा में मिस्र के देशभक्तों द्वारा आयोजित समारोह में भाषण करते हुए श्यामजी ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध आन्दोलनकारियों को एकजुट होकर कार्य करने का परामर्श दिया। अगस्त १९१४ में यूरोप के देश एक यथावत् महायुद्ध में प्रवृत्त हो गए थे। इस प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय से श्यामजी को कुछ निराशा हुई। जर्मनी की सुरक्षा में श्यामजी का बहुत सा धन लगा हुआ था। श्यामजी के अनन्य सहयोगियों में लोकमान्य तिलक का निधन १९२० में हो गया। भारतीय राजनीति के क्षितिज पर इन दिनों गाँधी जी का सितारा चमकने लगा था। तिलक मेमोरियल स्कीम के अन्तर्गत श्यामजी ने ४० हजार रुपये तिलक स्मृति भाषण माला के लिए दान दिए और गाँधीजी को तीन वर्षों के लिए व्याख्यान माला तय करने का अधिकार दिया। गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन की घोषणा हो चुकी थी। चौराचौरी काण्ड के कारण असहयोग आन्दोलन विफल भी हो चुका था। श्यामजी द्वारा सम्पादित इंडियन सोशियोलोजिस्ट में पुनः ब्रिटिश साम्राज्य के सहयोगी भारतीयों पर तीखे प्रहार होने लगे। १९२६ में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ का जेनेवा में अधिवेशन हुआ था। भारतीय मजदूरों के प्रतिनिधि के रूप में लाला लाजपत राय जेनेवा गए थे। श्यामजी अधिवेशन में उपस्थित थे। लालाजी ने देखा कि ८० वर्षीय वृद्ध नेता श्यामजी में मजदूरों और शोषितों के पक्ष में जुझारू रुचि अभी भी कायम थी। १९२९-३० तक आँखों की गंभीर व्याधि से पीड़ित होने के बावजूद देश के कार्यों में भाग लेते थे और उचित मार्गदर्शन करते थे।

३१ मार्च १९३० सायंकाल ६ बजे डूबते सूरज के साथ ही जेनेवा में भारतीय स्वतंत्रता का नक्षत्र अस्त हो गया। प्रसिद्ध समाजवादी लेखक मैक्सिम गोर्की ने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में श्यामजी कृष्ण वर्मा का वही स्थान स्वीकार किया है जो इटली के संघर्ष में मैजिनी का था। श्यामजी कृष्ण वर्मा भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के शिल्पी थे।

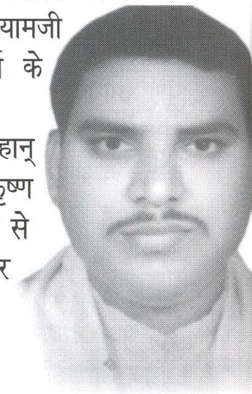

आइये! हम सब आर्यजन इस महान् राष्ट्रभक्त स्वातन्त्र्य रक्षक श्याम जी कृष्ण वर्मा के प्रेरणादायक जीवन एवं कार्यों से १६१वीं जयन्ती पर प्रेरणा लेकर राष्ट्रहित में स्वयं को समर्पित कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें।

उमा शंकर शास्त्री
प्राचार्य- महर्षि दयानन्द सरस्वती बाल मंदिर
तेघड़ा, बेगूसराय, (बिहार) ८५११३३

□□□

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **श्री गणेश दत्त जी गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.)** ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।

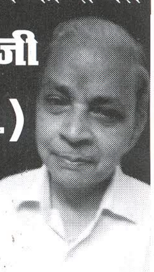

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.)

अब हम ईश्वर के अस्तित्व पर नये सिरे से विचार करते हैं- हमने अब तक वैज्ञानिकों से जो भी चर्चा सृष्टि विज्ञान पर की है, उससे एक विचार यह सामने आता है कि वैज्ञानिक 'क्यों' प्रश्न का उत्तर नहीं देते क्योंकि उनकी दृष्टि में यह विज्ञान का विषय नहीं है। हम संसार में नाना स्तरों पर निम्न प्रश्नवाचक शब्दों का सामना करते हैं

१. क्यों २. किसने ३. किसके लिए ४. क्या ५. कैसे आदि'

इन प्रश्नों में से 'क्या', 'कैसे' के उत्तर के विषय में वर्तमान विज्ञान विचार करने का प्रयास करता प्रतीत हो रहा है। यद्यपि इन दोनों ही प्रश्नों का पूर्ण समाधान तो विज्ञान के पास नहीं परन्तु प्रयास अवश्य ईमानदारी से हो रहा है। अन्य प्रश्न 'क्या', 'किसने' एवं 'किसके लिए' इन तीन प्रश्नों के विषय में विचार करना भी आधुनिक विज्ञान के लिए किंचिदपि रुचि का विषय नहीं है। हम इन प्रश्नों के आशय

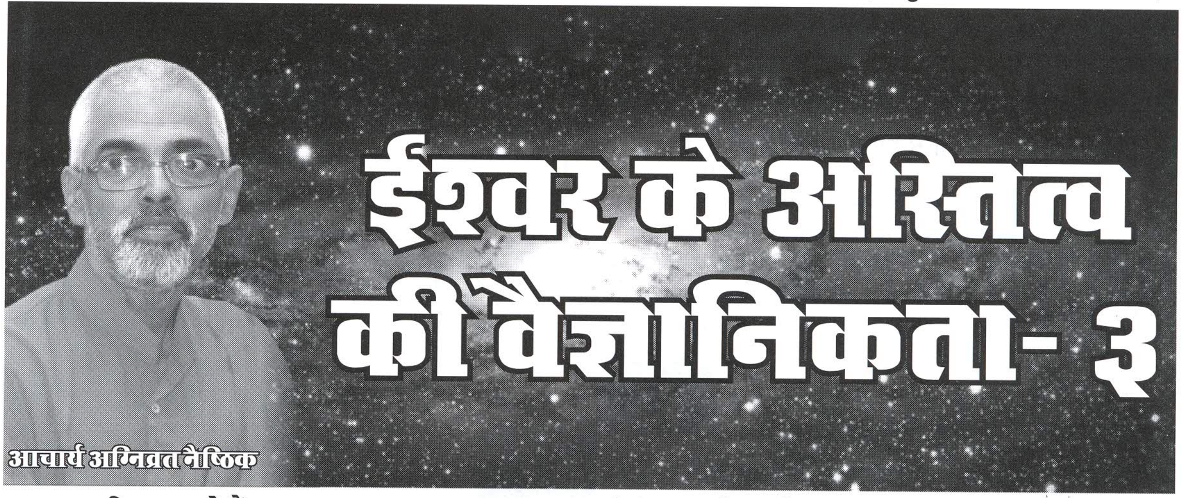

ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता- ३

पर क्रमशः विचार करते हैं-

१. क्यों- यह प्रश्न प्रयोजन की खोज के लिए प्रेरित करता है। हम निःसन्देह सारा जीवन नाना प्रकार के कर्मों को करते एवं नाना द्रव्यों का संग्रह करते हैं। इन सबका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है। कोई भी बुद्धिमान प्राणी किसी न किसी प्रयोजन हेतु ही कोई प्रवृत्ति रखता है। मूर्ख मनुष्य भले ही निष्प्रयोजन कर्मों में प्रवृत्त रहता हो, बुद्धिमान तो कदापि ऐसा नहीं करेगा। संसार पर विचार करें कि यह क्यों बना व क्यों संचालित हो रहा है? इसकी प्रत्येक गतिविधि का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य है। 'क्यों' प्रश्न की उपेक्षा करने वाला कोई वैज्ञानिक क्या यह मानता है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड निष्प्रयोजन रचना है? हमारे विचार से प्रत्येक मनुष्य को सर्वप्रथम 'क्यों' प्रश्न का उत्तर ही खोजने का यत्न करना चाहिये। जिस प्रकार वह कोई कर्म करने से पूर्व उसका प्रयोजन जानता है, उसी प्रकार इस सृष्टि के उत्पन्न होने, किसी शरीरधारी के जन्म लेने का प्रयोजन जानने का भी प्रयत्न करना चाहिये। वर्तमान विज्ञान के इस प्रश्न से दूर रहने से ही आज वह अनेकों अनुसन्धान करते हुए भी उनके प्रयोजन व दुष्प्रभाव पर विचार नहीं करता है। इसी कारण मानव अपने विविध क्रियाकलापों, यहाँ तक कि जीने के भी प्रयोजन का ज्ञान नहीं होने से भोगों की अतितृष्णा में भटकता हुआ अशान्ति व दुःखों के जाल में फंसता जा रहा है।

२. किसने- यह प्रश्न 'क्यों' से जुड़ा हुआ है। कोई कार्य किस प्रयोजन के लिए हो रहा है, इसके साथ ही इससे जुड़ा हुआ अन्य प्रश्न यह भी उपस्थित होता है कि उस कार्य को किसने सम्पन्न किया अथवा कौन सम्पन्न कर रहा है अर्थात् उसका प्रायोजक कौन है? इस सृष्टि की प्रत्येक क्रिया का एक निश्चित प्रयोजन है, साथ ही उसका प्रायोजक कोई चेतन तत्व है। कोई जड़ पदार्थ प्रायोजक नहीं होता। **जड़ पदार्थ प्रयोजन की सामग्री तो बन सकता है परन्तु उसका कर्त्ता अर्थात् प्रायोजक नहीं। चेतन तत्व ही जड़ तत्व पर साम्राज्य व नियन्त्रण करता है।** चेतन तत्व स्वतन्त्र होने से कर्त्तापन का अधिकारी है, जबकि जड़ पदार्थ स्वतन्त्र नहीं होने से कर्तृत्व सम्पन्न नहीं हो सकता।

३. किसके लिए- यह प्रश्न इस बात का विचार करता है कि किसी कर्त्ता ने कोई कार्य किया वा कर रहा है, तो क्या वह कार्य स्वयं के लिए किया वा कर रहा है अथवा अन्य किसी चेतन तत्व के लिए कर रहा है? यहाँ कोई उपभोक्ता होगा और उपभोक्ता भी चेतन ही होता है। जड़ पदार्थ कभी भी न तो स्वयं का उपभोग कर सकता है और न वह दूसरे जड़ पदार्थों का उपभोग कर सकता है।

४. क्या- यह प्रश्न पदार्थ के स्वरूप की पूर्णतः व्याख्या करता है। जगत् क्या है? इसका स्वरूप क्या है? मूल कण क्या हैं? ऊर्जा व द्रव्य क्या है? बल क्या है? इन सब प्रश्नों का समाधान इस क्षेत्र का विषय है। वर्तमान विज्ञान तथा दर्शन शास्त्र दोनों इस प्रश्न का उत्तर देने का यथासम्भव प्रयास करते हैं। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। वर्तमान विज्ञान इस प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर देने में समर्थ नहीं है। जहाँ विज्ञान असमर्थ हो जाता है, वहाँ वैदिक विज्ञान किंवा दर्शन शास्त्र इसका उत्तर देता है।

५. कैसे- कोई भी क्रिया कैसे सम्पन्न होती है? जगत् कैसे बना है? द्रव्य व ऊर्जा कैसे व्यवहार करते हैं? बल कैसे कार्य करता है? इन सभी प्रश्नों का समाधान इस क्षेत्र का विषय है। वर्तमान विज्ञान इस क्षेत्र में कार्य करता है परन्तु इसका भी पूर्ण सन्तोषप्रद उत्तर इसके पास नहीं है। अन्य प्रश्नों के उत्तर जाने बिना इसका सन्तोषप्रद उत्तर मिल भी नहीं सकता।

इन पाँच प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य कुछ प्रश्न भी हैं, जिनका समायोजन इन पाँचों प्रश्नों में ही प्रायः हो सकता है ।

क्रमशः.........

- आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

□□□

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १०/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१ म	१		१	■	२	२ न		२ हि	२
३	३ ह्म	३	ग्र ३	३	■	४	४ का	४	४ क
५	५ द	■	६	ख्या	■	७	७ ति	७	७ स

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. ऋषिगण मन्त्रकर्त्ता हैं अथवा मन्त्रद्रष्टा?
२. जीव सुषुप्ति और प्रलय में कैसे हो जाते हैं?
३. ऋषि मुनियों ने वेदार्थ और ऋषि मुनियों के इतिहास पूर्वक जो ग्रन्थ बनाए उनका क्या नाम है?
४. वेदमन्त्रों के ऊपर जिस ऋषि का नाम होता है वह मन्त्रों का क्या है?
५. ऋक्, यजुः, साम और अथर्व. मन्त्र संहिताओं का क्या नाम है?
६. अगर वेद मन्त्र भाग है तो ब्राह्मण क्या हैं?
७. वेदों में क्या नहीं है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०८/१८ का सही उत्तर

१. अपान २. जीव ३. आत्मा ४. गुण ५. सगुण
६. निर्गुण ७. ईक्षण ८. निराकार

''विस्तृत नियम पृष्ठ ०६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ नवम्बर २०१८

समाचार

डाक निदेशक के.के. यादव ने उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को किया सम्मानित

संस्कार भारती, गोमती शाखा, लखनऊ द्वारा कला गुरु सम्मान के

आयोजन के अवसर पर निदेशक डाक सेवाएँ श्री कृष्ण कुमार यादव ने साहित्य, कला, संगीत व नाट्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को सम्मानित भी किया। साहित्य हेतु वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कौशलेन्द्र पांडेय, चित्रकला हेतु अमर नाथ गौड़, नाट्य के क्षेत्र में ललित सिंह पोखरिया तथा संगीत के लिए भातखण्डे संगीत विद्यापीठ की रजिस्ट्रार सुश्री मीरा माथुर को कला गुरु सम्मान से सम्मानित किया गया।

चर्चित गायिका संगीता श्रीवास्तव, सरोज खुल्बे, राखी अग्रवाल व ममता त्रिपाठी ने सुबोध दुबे के निर्देशन में खूबसूरत गीतों की प्रस्तुति दीं। कार्यक्रम का संचालन इकाई के अध्यक्ष ई. अखिलेश्वर नाथ पांडेय व आभार गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने किया।

– सुबोध कुमार दुबे, कार्यक्रम संयोजक, इंदिरानगर, लखनऊ

डीएवी में वैदिक प्रचार सप्ताह का शुभारम्भ

डीएवी, कोटा में २६ अगस्त २०१८ को वैदिक प्रचार सप्ताह का

शुभारम्भ किया गया। विद्यालय प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने आर्य विद्वानों का स्वागत करते हुए कहा कि वेद में विद्यमान दिव्य ज्ञान ही भारत की राष्ट्रीय धरोहर है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पूरे संसार को 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा पगड़ी एवं पटका पहनाकर विद्यालय प्राचार्या एवं उपक्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती सरिता रंजन गौतम का सम्मान किया गया। अध्यक्षता महावीर नगर आर्य समाज के प्रधान श्री आर. सी. आर्य ने की। पूरा सप्ताह वैदिक ज्ञान से जुड़े कई आयोजन शहर के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये गए।

– प्रचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, कोटा

श्री अशोक आर्य 'विशिष्ट प्रतिभा सम्मान' से अलंकृत

विज्ञान समिति, उदयपुर ने अपने ६० वें स्थापना समारोह में श्रीमद्

दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य को उनकी विद्वता, वक्तृत्व शैली, लेखन कला तथा समाजोपयोगी कार्यों में संलग्नता के चलते **'विशिष्ट प्रतिभा सम्मान'** से सम्मानित किया। श्री अशोक आर्य जी को उदयपुर की सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

– उदयपुर नगर के सभी आर्य सदस्य

आर्यसमाज, हिरण मगरी उदयपुर में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन २० से २६ अगस्त तक किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिनाम वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई) के ब्रह्मत्व में प्रातः एवं सायं दोनों समय यज्ञोपरान्त आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित केशवदेव शर्मा (सुमेरपुर) ने हृदयग्राही भजनों की प्रस्तुतियाँ दीं। आचार्य जी ने संध्या एवं ईश्वर-स्तुति-प्रार्थना उपासना के गूढ़ रहस्यों को खोलकर व्याख्यान दिए। २३ अगस्त सायंकालीन सत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विचारक एवं कलम के धनी डॉ. वेदप्रताप जी वैदिक ने धर्मसभा को उद्बोधित करते हुए प्रेरित किया कि व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के सही विकास हेतु हमें बालकों, किशोरों और युवाओं को आर्यसमाज से जोड़कर संस्कारित करना होगा। प्रतिदिन सुबह-शाम उपस्थित सभी महानुभावों को पाखण्ड-खण्डन आदि विभिन्न विषयों पर लघु प्रपत्र वितरित किये गए। इस अवसर पर आधे मूल्य पर वैदिक साहित्य का विक्रय किया गया।

– श्रीमती ललिता मेहरा, प्रधाना

श्रावणी उपाकर्म संग यज्ञोपवीत जयन्ती मनाई

आर्य समाज, नागदा (म.प्र.) में दिनांक २६ अगस्त २०१८ को श्रावणी उपाकर्म एवं यज्ञोपवीत जयन्ती बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुयी। यज्ञोपवीत रहस्य, यज्ञोपवीत सम्बन्धी नियम आदि पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज के धर्माचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने श्रावणी उपाकर्म यज्ञोपवीत जयन्ती के अवसर पर कहा कि यज्ञोपवीत के त्रिवेणी संगम तीर्थराज में स्नान कर जीवन सुधारें।

इस अवसर पर वैद्य रामसेवकजी पाण्डे ने भी अपने विचार प्रकट किए। गायत्री पांचाल, महेश सोनी व डॉ. सत्यार्थी ने गीतों की प्रस्तुति दी। रक्षाबंधन पर्व पर आयोजित यज्ञ में अनेक आर्य सज्जनों ने आहुति दे वैदिक मंत्रो के साथ नवीन यज्ञोपवीत धारण किये। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमल आर्य ने किया।

– वैद्य अग्निवेश पाण्डेय

आर्य समाज गरोठ (म.प्र.) में वेद प्रचार महोत्सव

आर्यसमाज गरोठ (म. प्र.) के तत्त्वावधान में भाद्रपद कृष्णा दशमी से द्वादशी विक्रमी सम्वत् २०७५ तदनुसार दिनांक ५ से ७ सितम्बर २०१८ पर्यन्त त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर वेद प्रवचन के कार्यक्रम हुए। आयोजन में गरोठ परिक्षेत्र के श्रद्धालु सहज रूप से पधारकर लाभान्वित होते रहे।

– आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, वेद व्याख्याता

दो दिवसीय आवासीय वर्कशॉप

अध्यात्म साधना केन्द्र, मन्दिर रोड़, छतरपुर मेट्रो स्टेशन, दिल्ली में 'मस्तिष्क शक्ति, योग व आयुर्वेद द्वारा स्वस्थ, सुखी व सफल जीवन' पर दिनांक १४ सितम्बर सायं ५ बजे से १६ सितम्बर २०१८ रात्रि ६ बजे तक दो दिन का आवासीय वर्कशॉप का आयोजन हुआ। इस आवासीय शिविर से अनेक साधक लाभान्वित हुए।

– सुश्री भारती अरोड़ा, दिल्ली

हलचल

स्वतंत्रता दिवस भव्यता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर के द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में विद्यालय की छात्राओं ने राष्ट्रगान, देशभक्ति गीत, नृत्य, सूर्य नमस्कार, व्यायाम, अग्रेजी एवं हिन्दी में, पर्व पर भाषण देकर उपस्थित अतिथियों, गणमान्य व्यक्तियों, आर्य समाज के सदस्यों, अध्यापिकाओं, अभिभावकों आदि का मन मोह लिया। छात्राओं द्वारा बनाई विविध सामग्री को प्रदर्शित कर, इनका विक्रय भी किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती डॉ. कुसुम विजयवर्गीय ने ध्वजारोहण किया। लायन्स क्लब मेवाड़ के अध्यक्ष श्री चौधरी के साथ अन्य सदस्य महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के पूर्व कुलपति प्रो. वीर बहादुर सिंह, प्रो.भारद्वाज, प्रो. राजवंशी, प्रो. तापड़िया आदि का इस समारोह मे सान्निध्य प्राप्त हुआ। विद्यालय अध्यक्ष श्रीमती ललिता मेहरा ने अतिथियों का स्वागत, मानद निदेशिका श्रीमती पुष्पाजी सिन्धी ने विद्यालय परिचय, सचिव कृष्ण कुमार सोनी ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। श्री भूपेन्द्र शर्मा ने समारोह का सुन्दर संचालन किया।

- श्री संजय शाण्डिल्य, मंत्री-आर्य समाज

द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली विश्वविद्यालय के पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (सान्ध्य) के संस्कृत विभाग एवं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २७-२८ अक्टूबर २०१८ को द्विदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। आपसे अनुरोध है कि अपने महाविद्यालय के संस्कृत, हिन्दी व अन्य प्राध्यापकों को इस संगोष्ठी में प्रतिभागिता हेतु नामित करें। संगोष्ठी से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी हेतु कृपया निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।

- डॉ. अंकुर त्यागी- 9971988058; डॉ. राजेश कुमार- 9891526584, 9555666907; विमलेश त्रिपाठी- 9871555810

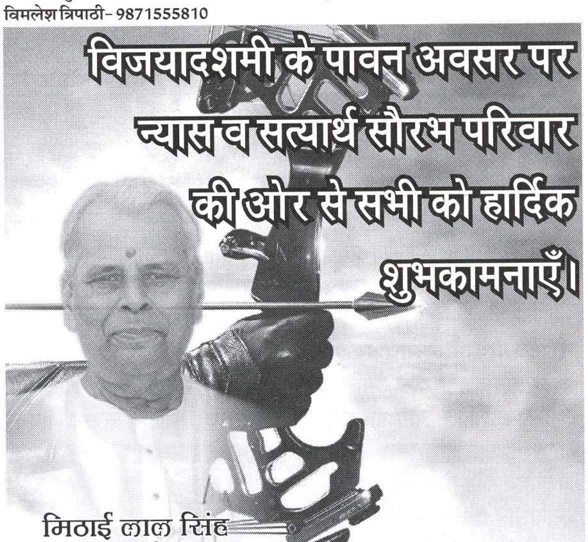

प्रतिस्वर

सम्पादक जी सत्यार्थ सौरभ, सादर नमस्ते

हर्ष है कि सत्यार्थ सौरभ गुणात्मक दृष्टि से निरन्तर प्रगति कर रही है, उसका एक-एक लेख एवं आपका सम्पादकीय स्वाध्याय की दृष्टि से विशिष्ट स्तर का होता है, जिसके लिये मैं आर्य समाज सण्डीला, जनपद हरहोई, उ. प्र. की ओर से आपको बधाई देता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि सत्यार्थ सौरभ प्रत्येक स्वाध्यायशील व्यक्ति के पास पहुँचे। इसी दृष्टि से मैं जहाँ भी जाता हूँ सत्यार्थ सौरभ ले जाता हूँ, स्वाध्यायशील लगने वाले व्यक्तियों को दे आता हूँ।

- डॉ. सत्य प्रकाश आर्य, हरदोई

छात्र/छात्राओं की मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता सम्पन्न

जयपुर ६ सितम्बर २०१८ को श्री हरिसिंह जी आर्य, स्वतंत्रता सेनानी की ग्यारहवीं पुण्यतिथि पर 'सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास' द्वारा आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर में कक्षा ६ से १२ तक के छात्र/छात्राओं की मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रथम वर्ग में वैदिक कन्या विद्यालय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर की सुश्री प्रियंका मीणा-अक्षिता रॉय प्रथम, दयानन्द बाल सदन, अजमेर (छात्र वर्ग) मा. भरत कुमार- मा. रोहित कुमार द्वितीय, डी. ए. वी. सेन्ट्रल सी. सै. स्कूल, बर्फखाना की सुश्री वर्षा लालवानी एवं सुश्री रिया तुलसानी तृतीय रहीं। इन्हें क्रमशः ११००रु., ७५०रु., ५००रु. नकद प्रदान किये गये। वरीयता प्राप्त वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर को ट्रॉफी प्रदान की गई।

द्वितीय वर्ग में डी. ए. वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर जयपुर, की सुश्री मीमांसा जोशी-सुश्री प्रियांशी अग्रवाल प्रथम, गुलाब देवी मथुरा प्रसाद आर्य कन्या विद्यालय अजमेर की सुश्री पूनम आर्या-सुश्री कविता द्वितीय, दयानन्द बाल सदन अजमेर (छात्र वर्ग) के मा. विकास कुमार-मा. चीकू सिंह तृतीय रहे। इन्हें क्रमशः ११००रु., ७५०रु., ५००रु. नकद प्रदान किये गये। वरीयता प्राप्त डी. ए. वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर जयपुर को ट्रॉफी प्रदान की गई। इस अवसर पर अजमेर के पूर्व सांसद प्रो. रासासिंह जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता, श्री एम.एल.गोयल एवं संचालन न्यास मंत्री ओ.पी. वर्मा ने किया।

- ओ.पी.वर्मा, मंत्री-न्यास

सत्यार्थ सौरभ के सभी सुधी पाठकों को यह सूचित किया जाता है कि सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०८/१८ एवं ०९/१८ के विजेताओं की सूची एक साथ नवम्बर माह की पत्रिका में प्रकाशित की जावेगी एवं उसी अंक में २१वें सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का विस्तृत विवरण भी आप पढ़ सकते हैं। धन्यवाद -सम्पादक-सत्यार्थ सौरभ

गुणों की खान गेहूँ का ज्वारा

स्वास्थ्य

जब गेहूँ के बीज को अच्छी उपजाऊ जमीन में बोया जाता है तो कुछ ही दिनों में वह अंकुरित होकर बढ़ने लगता है और उसमें पत्तियाँ निकलने लगती हैं। जब यह अंकुरण पाँच-छह पत्तों का हो जाता है तो अंकुरित बीज का यह भाग गेहूँ का ज्वारा कहलाता है। औषधीय विज्ञान में गेहूँ का यह ज्वारा काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है। गेहूँ के ज्वारे का रस कैंसर जैसे कई रोगों से लड़ने की क्षमता रखता है।

गेहूँ के ज्वारे क्लोरोफिल के सर्वश्रेष्ठ स्रोत हैं। इनमें सभी विटामिन्स प्रचुर मात्रा में होते हैं जैसे विटामिन ए, बी१, २, ३, ५, ६, ८, १२ और १७ (लेट्रियल), सी, ई तथा के। इसमें कैल्शियम, मेग्नीशियम, आयोडीन, सेलेनियम, लौह, जिंक और अन्य कई खनिज होते हैं।

लेट्रियल या विटामिन बी-१७ बलवान कैंसररोधी है और मेक्सिको के ओएसिस ऑफ होप चिकित्सालय में पिछले पचास वर्ष से लेट्रियल के इंजेक्शन, गोलियों और आहार चिकित्सा से कैंसर के रोगियों का उपचार होता आ रहा है।

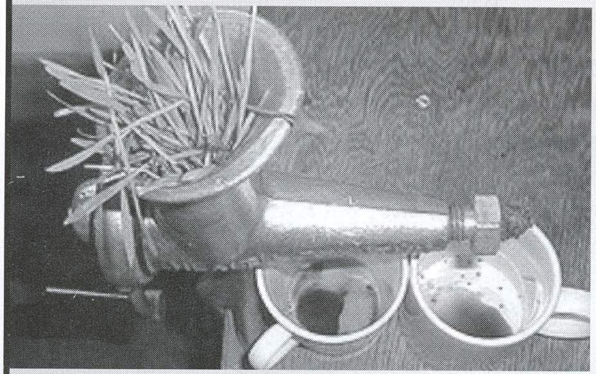

पश्चिमी देशों में गेहूँ के ज्वारों से उपचार की पद्धति डॉ. एन. विग्मोर ने प्रारम्भ की थी। बचपन में उनकी दादी प्रथम विश्व युद्ध में घायल हुए जवानों का उपचार जड़ी-बूटियों, पेड़-पौधों और विभिन्न प्रकार की घासों से किया करती थीं। तभी से उन्होंने जड़ी-बूटियों और विभिन्न घासों के रस द्वारा बीमारियों का उपचार और अनुसंधान करना अपना शौक बना लिया। ५० वर्ष की उम्र में डॉ. एन. विग्मोर को आंत में कैंसर हो गया था। जिसके लिए उन्होंने गेहूँ के ज्वारों का रस और अपक्व आहार लिया और प्रसन्नता की बात थी कि एक वर्ष में वे कैंसर मुक्त हो गईं। उन्होंने बोस्टन में एन विगमोर इन्स्टिट्यूट खोला जो आज भी काम कर रहा है। तब से लेकर अपनी मृत्यु तक वह गेहूँ के ज्वारे और अपक्व आहार द्वारा रोगियों का उपचार करती रहीं। उन्होंने इस विषय पर ३५ पुस्तकें भी लिखी हैं।

Wheat Grass Juice में शुद्ध रक्त बनाने की अद्‌भुत शक्ति है, तभी तो इन ज्वारों के रस को 'ग्रीन ब्लड' कहा गया है। इसे ग्रीन ब्लड कहने का एक कारण यह भी है कि रासायनिक संरचना पर ध्यानाकर्षण किया जाए तो गेहूँ के ज्वारे के रस और मानव रुधिर दोनों का ही पी.एच. फैक्टर ७.४ ही है, जिसके कारण इसके रस का सेवन करने से इसका रक्त में अभिशोषण शीघ्र हो जाता है, जिससे रक्ताल्पता (एनीमिया) और पीलिया (जांडिस) रोगी के लिए यह ईश्वर प्रदत्त अमृत हो जाता है। गेहूँ के ज्वारे के रस का नियमित सेवन और नाड़ी शोधन प्रणायाम से मानव शरीर की समस्त नाड़ियों का शोधन होकर मनुष्य समस्त प्रकार के रक्तविकारों से मुक्त हो जाता है।

अगर आप भयंकर से भयंकर बीमारी से ग्रस्त हैं, और आपको लगता है कि ये बीमारियाँ आपकी जान ले कर ही छोड़ेंगी, और आप दवा ले-ले कर थक चुके हों, तो एक बार गेंहूँ के ज्वारे के रस Wheat Grass Juice को जरूर आजमायें। गेहूँ के ज्वारे से रस निकालते समय यह ध्यान रहे कि पत्तियों में से जड़ वाला सफेद हिस्सा काट कर फेंक दें। केवल हरे हिस्से का रस सेवन कर लेना ही विशेष लाभकारी होता है। रस निकालने के पहले ज्वारे को अच्छी तरह धो लेना चाहिए। यह ध्यान रहे कि जिस ज्वारे से रस निकाला जाय उसकी ऊँचाई अधिकतम पाँच से छः इंच ही हो।

गेहूँ के ज्वारे उगाने की विधि

आप १५ छोटे-छोटे गमले लेकर प्रतिदिन एक-एक गमलों में भरी गयी मिट्टी में ५० ग्राम गेहूँ क्रमशः छिड़क दें, जिस दिन आप १५वें गमले में गेहूँ डालें उस दिन पहले दिन वाला गमले में गेहूँ का ज्वारा रस निकलने लायक हो जायेगा। यह ध्यान रहे कि ज्वारे की जड़ वाला हिस्सा काटकर फेंक देंगे। पहले दिन वाले गमले से जो गेहूँ उखाड़ा उसी दिन उसमें दूसरा गेहूँ पुनः बो देंगे। यह क्रिया हर गमले के साथ होगी ताकि आपको नियमित ज्वारा मिलता रहे।

□□□

साभार- अन्तर्जाल

कथा सरित

संसार में वही जीवित है जो यशस्वी है। जिसकी अपकीर्ति है वह तो मृतक के समान है। जीवन की सार्थकता यश कीर्ति प्रतिष्ठा से है। व्यापार धन से नहीं, यश प्रतिष्ठा से फूलता फलता है। इसलिये व्यापारी के लिये धन से अधिक महत्वपूर्ण उसकी प्रतिष्ठा होती है। इसीलिये व्यापार में ख्याति (गुडविल) एक अपूर्व और बहुमूल्य सम्पत्ति समझी जाती है। यहाँ ऐसा ही एक प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत है जहाँ एक व्यापारी ने बात ही बात में एक साधारण से पत्थर को तीन लाख दीनार (ईरानी सिक्का) में खरीद कर जीवन की सार्थकता को चरितार्थ किया।

ईरान का होरमझ बन्दरगाह। यहाँ देश-विदेश के व्यापारियों के गोदाम थे। केसरी रंग के झण्डे वाले गोदाम भद्रावती (कच्छ) के व्यापारीसम्राट जगतसिंह जगडूशाह के थे। उनका बड़ा मुनीम जेतसिंह यहाँ काम किया करता था। नीले रंग के झण्डे वाले गोदाम शहाबुद्दीन के थे। वे कुटुम्ब सहित स्वयं यहाँ रहकर व्यापार सम्भालते थे।

किसी वाहन में एक सुन्दर शिला निकली थी। जिसका रूप चम्पा के फूल जैसा था और कारीगर की टांकी स्पर्श करते ही अद्वितीय नक्काशी उभर उठे ऐसी मखमली कोमलता उसमें थी। दो एक दिन में एक वाहन भद्रावती की ओर जाने वाला था। मुनीम जेतसिंह ने इस पत्थर को वाहन में चढ़ाने की आज्ञा दी। बन्दरगाह के अधिकारी इसके लिए सहमत थे।

जेतसिंह के नौकर जब इस पत्थर को उठाकर गोदी पर ले जा रहे थे तभी अमरूद्दीन सेठ का गुमाश्ता वहाँ से गुजरा।

जीवन की सार्थकता प्रतिष्ठा से

उसने पत्थर को रिक्शा में देखकर कहा यह पत्थर हमें ले जाना था। हमारे सेठ ने अभी बात की थी। इसकी खंभात जाने वाले जहाज में प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मजदूरों ने कहा- आप मुनीम जेतसिंह से मिलिये। हमें अपना काम करने दीजिए।

गुमाश्ता यह सुनकर उबल उठा और बोला अरे! खंभात के व्यापारी सम्राट अमरूद्दीन सेठ को जानते हो कि नहीं? खबरदार जो पत्थर हिलाया तो रंग में भंग हो जायेगा। मजदूर बोले ठीक है भाई आपने भद्रावती के जगत् सेठ जगडूशाह का नाम भी सुना होगा?

बस फिर क्या था। बात ही बात में रार बढ़ गई। गुमाश्ता अमरूद्दीन सेठ को वहाँ बुला लाया। वह बोले- यह पत्थर हम मस्जिद के मिम्बर में जड़वाने के लिए खंभात ले जाने की सोच रहे थे। अब तुमने हाथ लगा दिया इसलिये धर्म के काम में छीना झपटी या जोर जबरदस्ती से काम नहीं होगा। अतः अब बोली बोलिये जो बढ़ेगा वही इसे ले जायेगा। अमरूद्दीन सेठ के सामने कौन बोलता? मुनीम जेतसिंह को बुलाया गया। वह दो घोड़ों के रथ पर सवार होकर पहुँचे। उनका भी रौब भारी था। बोलिये हमारे एक हजार दीनार? अमरूद्दीन सेठ ताव में आगे बढ़े।

जेतसिंह ने सोचा अब यह पत्थर, पत्थर नहीं अपितु पेढ़ी की प्रतिष्ठा का विषय बन गया है और व्यापारी के लिए प्रतिष्ठा ही धन है। उसने धीरे से कहा पन्द्रह सौ दीनार हमारे।

हमारे दो हजार दीनार। देखिये बनिया भाई की मूँछ नीची मत कीजिए। अमरूद्दीन सेठ बोले। उन्होंने सोचा नौकर मुनीम की शक्ति नहीं जो आगे बढ़ सके और बोली बढ़े। आगे बोलेगा तो सेठ नौकरी से निकाल देगा। किन्तु मुनीम जेतसिंह बिना रुके आगे बोला मेरा पच्चीस सौ।

हमारे तीन हजार- अमरूद्दीन बोले, मानो जेतसिंह को चाबुक मार रहे हों।

हमारे साढ़े तीन हजार जेतसिंह ने ठण्डे कलेजे से कहा बाहर से यह ठण्डा दिख रहा था पर भीतर ज्वालामुखी जाग उठा था। अब लौट जाना सम्भव न था। यह पेढ़ी और सेठ की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था।

हमारे चार हजार अमरूद्दीन बोले। हमारे पाँच हजार जेतसिंह बोले।

बात खूब रंग पर चढ़ गई, बोली बुलती रही। अन्त में जेतसिंह ने तीन लाख दीनार में यह पत्थर खरीद लिया। दूसरे दिन ही भद्रावती के लिये चढ़वा दिया।

सब बन्दरगाहों पर जगडूशाह सेठ की कीर्ति वाह-वाह के रूप में होने लगी।

तीन लाख का पत्थर जिस वाहन में रखकर भद्रावती को चला उसी में मुनीम जेतसिंह भी बैठ गये। मुनीम का मन भारी था। उसे सेठ ने कमाने के लिए यहाँ भेजा था। ऐसी निरर्थक होड़ में पड़कर पेढ़ी को हानि पहुँचाने के लिये नहीं। आज उसके हाथों पेढ़ी को अपार हानि हो गई। वह यह सोचकर चिन्ताग्रस्त था। अन्त में कच्छ का किनारा दिखाई दिया। भद्रावती नगर की गगनचुम्बी हवेलियों की ध्वजायें दिखाई दीं जेतसिंह का दिल धड़कने लगा अब क्या होगा?

जहाज पहुँचा जहाज से सब लोग उतर गये सेठ को अपना मुनीम जेतसिंह नहीं दिखाई पड़ा। उसने भीतर तहखाने में जाकर उसे देखा और उससे पूछा जहाज से नीचे क्यों नहीं उतरे हो यहाँ क्यों बैठे हो?

जेतसिंह ने रुंधासे गले से कहा अब मुँह दिखलाने लायक नहीं रहा सेठ साहब मैं तो लाख के बारह हजार करने वाला निकला। पर एक प्रार्थना है।

सेठजी ने चिढ़ के स्वर में कहा कैसी प्रार्थना है?

जेतसिंह बोला- पहली प्रार्थना है कि आपको मुझे जो भी कहना हो एकान्त में कहना। मैं भूल स्वीकार करता हूँ किन्तु इसका सार्वजनिक अपमान मुझे शूल जैसा लगेगा। मानो उसके शब्दों में पश्चाताप झलक रहा था।

सेठ बोले- 'लेकिन अब जो कहना है वह सब सार्वजनिक रूप से ही कहूँगा। चलो खड़े हो जाओ।' सेठ ने मुनीम की कलाई पकड़ी मानों बाज ने चिड़िया पकड़ ली हो। जेतसिंह पीछे खिंचता चला गिड़गिड़ा रहा था। सेठ उसे खींचता हुआ जहाज से नीचे उतार लाया और उतरते ही सेवक को आवाज लगाई- जमादार, रथ में से वह सब लाओ।

सेवक एक पोटली लेकर उपस्थित हुआ उसमें से सेठ ने एक लाल पगड़ी निकाली और मुनीम जेतसिंह के सिर पर बाँधी। एक मूल्यवान मोती का कण्ठा निकाला और उसे उसके गले में डालते हुए कहा जेतसिंह को आज से मैं अपनी पेढ़ियों का मुख्य मुनीम नियुक्त करता हूँ। व्यापारी के लिए धन से अधिक प्रतिष्ठा आवश्यक है। इसने परदेश में जगडूशाह की इज्जत बढ़ाई है आज जो लोग देश-विदेश से लाखों रुपया पेढ़ी में जमा कराने आते हैं वह कहते हैं कि एक आंट के लिये जो तीन लाख दीनार फेंक दे उसकी धन सम्पत्ति कितनी होगी? चलो अब प्रतिष्ठा के इस पत्थर को रथ में रखो। एक ओर मैं बैठूँगा दूसरी ओर तुम। तुमने आज मेरे नाम को जगत् प्रसिद्ध कर मेरा जीवन भी सार्थक कर दिया और अपना भी।

❑❑❑

साभार- हितोपदेशक

सत्यार्थ-पीयूष
सृष्टि रचना ज्ञानवान सत्ता का कार्य

ज्ञानादि गुणों का प्रत्यक्ष होना:- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ईश्वर सिद्धि में एक और युक्ति दी है कि ज्ञानवान सत्ता के कार्य में ही ज्ञान प्रत्यक्ष होता है। जड़ में ज्ञान का अभाव है। अतएव जो लोग ऐसा मानते हैं कि जड़ प्रकृति स्वयमेव सृष्टिरूप बनी है वह मान्यता सत्य नहीं हो सकती। **क्योंकि सृष्टि की प्रत्येक रचना में, नियम में, अपूर्व ज्ञान के दर्शन होते हैं अतएव कर्त्ता निश्चित रूप से ज्ञान युक्त है।** ईश्वर ने यह सृष्टि ज्ञान पूर्वक बनायी है। प्रमाण स्वरूप देखें ऋग्वेद के निम्न मंत्र का ऋषिकृत भाष्य-

स पूर्वया निविदा कव्यतायोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम्।
विवस्वता चक्षसा द्यामपश्च देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्।

- ऋ. १/९६/२

ज्ञानवान उत्पादक के बिना कोई जड़ कार्यरूप वस्तु स्वयं उत्पन्न नहीं हो सकती है। इसलिए (सब लोग) सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को समस्त संसार का उत्पादक मानें।

एक व्यंगकार ने अपनी एक रचना में कहा था कि 'हाथ दोनों ओर न होकर एक ओर ही होते तो?' पाठक विचार करें कि ऐसा होता तो कितनी कठिनाईयाँ होतीं। इस सूत्र को पकड़कर सम्पूर्ण मानव शरीर की रचना का गहराई से अध्ययन करें। क्या कोई भी बुद्धिमान से बुद्धिमान मनुष्य इस रचना में ऐसा परिवर्तन सुझा सकता है कि जिसके होने से यह शरीर पूर्वापेक्षा अधिक उपयोगी बन जाये? ऐसा कभी नहीं हो सकता। **परमेश्वर की रचना पूर्ण है क्योंकि वह पूर्ण है, सर्वज्ञ है। यही पूर्णता, यही सर्वज्ञता सृष्टि के कण-कण में बिखरी पड़ी है।** यही पृथ्वी पर हमारे जीवन को संभव बना रही है। सृष्टि की प्रत्येक रचना परोक्ष या प्रत्यक्ष किसी न किसी रूप में एक दूसरे की पूरक है, सहयोगी है। इसलिए इस विविधता व सन्तुलन में किसी भी प्रकार का पौरुषेय हस्तक्षेप स्वयं को ही नुकसान पहुँचाने वाला हो जाता है। प्राणियों और पेड़ों को नष्ट करने वाला मानव अब धीरे-धीरे इस तथ्य को समझता जा रहा है कि उस पूर्ण पुरुष की रचना में इस अल्पज्ञ द्वारा हस्तक्षेप अन्ततः स्वयं के लिए ही घातक है।

ईश्वर सिद्धि-ज्ञानादि से प्रत्यक्ष-
अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः।
सम्राजन्तमध्वराणाम्।। - ऋ. १/२७/१
जैसे विद्वान् अपने विद्या आदि गुणों से अपने राज्य में प्रकाशित होता है, वैसे ही परमेश्वर अपने सर्वज्ञता आदि गुणों से सर्वत्र प्रकाशित होता है।

प्रभु निर्मित सहअस्तित्व का मात्र एक अनुपम उदाहरण देखें।

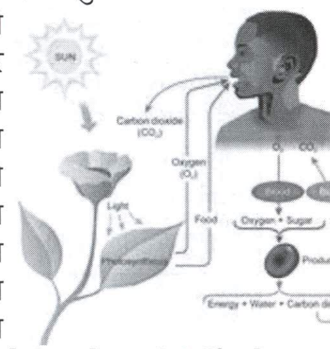

जन्तु जगत् द्वारा प्रतिक्षण जो अशुद्ध वायु छोड़ी जाती है अगर उसके निराकरण का कोई उपाय न हो तो कुछ ही समय में सारा वायुमण्डल विषाक्त हो प्रलयंकारी हो जायेगा। पर इसके निराकरण की प्रभु की अद्भुत व्यवस्था देखिये। शुद्धिकरण का यह सारा कार्य न केवल ओटोमेटिक होता रहता है वरन् इस क्रम में मानव के लिए भोजन भी निर्मित हो जाता है। जो अशुद्ध वायु हमारे लिए विष समान है वही वनस्पति जगत् के लिए अमृत है। जन्तुओं द्वारा छोड़ी गई अशुद्ध वायु वनस्पति जगत् के सदस्यों द्वारा ग्रहण कर ली जाती है और उसी से भोजन का निर्माण किया जाता है, न सिर्फ इतना वरन् साथ में हमें प्राणवायु भी प्रदान कर दी जाती है। **यह सर्वोच्च ज्ञानवान सत्ता के कर्तृत्त्व एवं अभूतपूर्व दया का प्रत्यक्ष है।**

उसके कर्म ज्ञानमय हैं-
यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः।
तस्मादेतद् ब्रह्म नाम रूपमन्नञ्च जायते।। - मुण्डकोपनिषद् १/१/९
जो सर्वज्ञाता, सर्वव्यापक, ज्ञान ही जिसका तप (कर्म÷ है। उसी के विकास से यह वेदज्ञान, बृहत् नाम-रूप वाला जगत्, और यह अन्न, जिससे सब व्यवहार चल रहा है, उत्पन्न होता है।

अब तनिक पृथ्वी-सूर्य के आकार, इनके बीच की दूरी, इनकी गतियों पर विचार करें। क्या इनमें कोई ऐसा परिवर्तन संभव है जो जीवन को अधिक सुगम बना सके? कदापि नहीं।

मसखरे लोग कभी-कभी पृथ्वी के आकार की चर्चा करके असमानता का उल्लेख करते हैं। किन्तु वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि पृथ्वी का आकार चन्द्रमा जितना होता तो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण की शक्ति न वायु मण्डल को संभाल सकती, न पानी को और तापमान भी इतना समातीत होता कि जीवन धारण करना कठिन हो जाता दूसरी ओर अगर पृथ्वी का आकार दुगुना होता तो पृथ्वी पर वायुमण्डल का दबाव खतरनाक रूप से बढ़कर जीवन अतीव कठिन हो जाता। पृथ्वी अगर सूरज जितनी बड़ी हो जाय तो मनुष्य का आकार गिलहरी जितना हो जावेगा।

❑❑❑

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

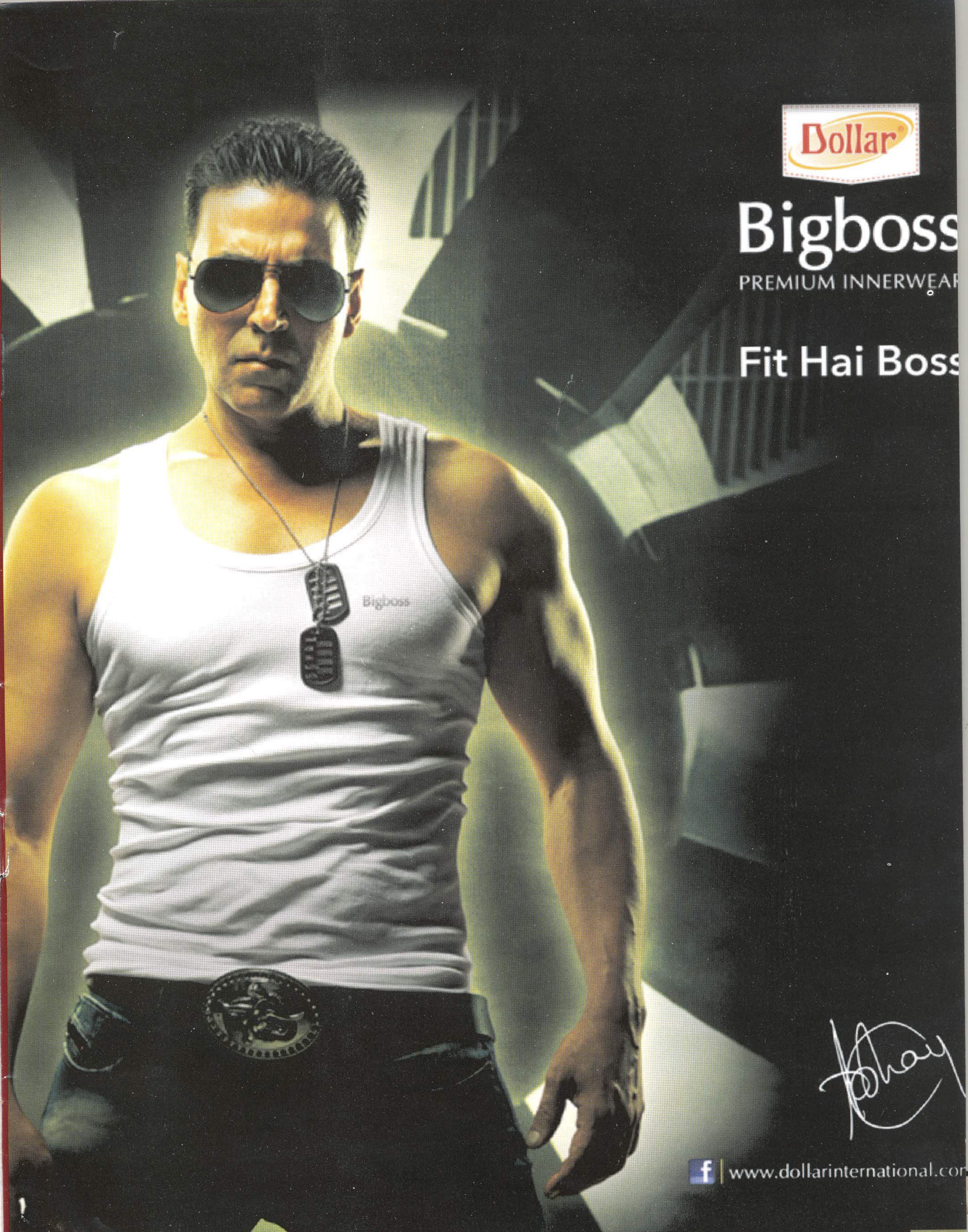
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण में यही रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन, संभाषण और स्पर्श आदि कर्म्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवें।

सत्यार्थप्रकाश, पृष्ठ ३३

COPL-1226

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर